।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या-
UP MRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द १९५
मानव सृष्टि सं.- १९६०८५३११९
सृष्टि सं.- १९७२९४९११९

वर्ष–17 अंक–13 आश्विन शु. 7 से कार्तिक कृ. 7 सं. 2075 वि. 16 से 31 अक्टूबर 2018 अमरोहा, उ.प्र. प्रति–5/–

दिल्ली में ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

२५ से २८ अक्टूबर तक स्वर्ण जयंती पार्क रोहिणी में जुटेंगे विश्वभर के आर्यजन

विनय आर्य, महामंत्री
नई दिल्ली।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली 2018 के आयोजन की तैयारियां अब चरम पर हैं। विश्व भर से आर्यजन इस महासम्मेलन में भारी संख्या में पहुंच रहे हैं। हॉलैण्ड, नीदरलैण्ड, बैल्जियम, अमेरिका, इंग्लैण्ड, नेपाल, भूटान, बर्मा, मलेशिया, त्रिनिडाड, मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका आदि सहित विश्व के अनेक देशों में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली द्वारा सम्पर्क साधा गया है। सार्वदेशिक सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली' का भव्य आयोजन दिल्ली के स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी में दिनांक 25-26-27 एवं 28 अक्टूबर, 2018 तक किया जा रहा है।

देश सहित सारे आर्यजगत में इसकी तैयारियां जोरों पर हैं। वर्ष 2012 के दिल्ली महासम्मेलन के उपरान्त दक्षिणी अफ्रीका, सिंगापुर-थाईलैंड, आस्ट्रेलिया, नेपाल एवं बर्मा में सफल आयोजनों के पश्चात् दिल्ली में पुनः इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। आयोजन समिति ने आर्यजनों से अपील की है कि अपनी-अपनी आर्यसमाज के समस्त अधिकारियों, सदस्यों के परिवार एवं विशेषकर युवाओं सहित अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने के लिए आर्यजनों को प्रेरित करें।

लोगो, होर्डिंग्स, पोस्टर, पेम्फलेट आदि प्रचार सामग्री प्रान्तीय सम्मेलन कार्यालय अथवा केन्द्रीय सम्मेलन कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है तथा www.aryamahasammelan.org तथा www.thearyasamaj.org से डाउनलोड भी की जा सकती है।

वयोवृद्धों का होगा सम्मान

आर्य महासम्मेलन में 80 वर्ष से अधिक आयु के ऐसे महानुभावों का जिन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को समर्पित किया हो, अथवा विशेष योगदान दिया हो, का नों का पूर्ण विवरण लिखकर केन्द्रीय आयोजन समिति को भेजें, जिससे उनके नामों पर समिति विचार कर सके। महासम्मेलन में युवा कार्यकर्ता/महिला कार्यकर्ता, जिन्होंने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अत्यंत उल्लेखनीय कार्य किया हो, को भी सम्मानित किया जाएगा।

विशेष सम्मान किये जाने की योजना है। ऐसे आर्यजनों का पूर्ण विवरण लिखकर केन्द्रीय आयोजन समिति को भेजें, जिससे उनके नामों पर समिति विचार कर सके। महासम्मेलन में युवा कार्यकर्ता/महिला कार्यकर्ता, जिन्होंने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अत्यंत उल्लेखनीय कार्य किया हो, को भी सम्मानित किया जाएगा।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-२०१८ के अवसर पर

२१-२२वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 21वां सम्मेलन उच्च आय वर्ग एवं उच्च शिक्षित प्रोफेशनल युवक युवतियों के लिए तथा 22वां आर्य परिवार युवक युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन का आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सम्मेलन स्थल- स्वर्ण जयन्ती पार्क, सैक्टर- 10, रोहिणी, नई दिल्ली में 26-27 अक्टूबर को प्रातः 10 बजे किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। **उच्च वर्ग के लिए पंजीकरण शुल्क** 800/– **रुपये एवं सामान्य वर्ग के लिए पंजीकरण शुल्क** 300/– **है।** पंजीकरण फार्म **www.thearyasamaj.org** से डाउनलोड किया जा सकता है। आवेदन हेतु पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम वर्गानुसार राशि 800/– **रुपये अथवा** 300/– **रुपये** का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **खाता संख्या** 910010001816166 **IFSC-UTIB0000223** एक्सिस बैंक करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। आवेदन भेजने की **अन्तिम तिथि** 15 **अक्टूबर,** 2018 है। इसके बाद प्राप्त आवेदनों को विवरणिका में प्रकाशित नहीं किया जा सकेगा। आप अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण **www.matrimony.thearyasamaj.org** पर ऑनलाइन भी कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा राष्ट्रीय संयोजक (मो0 : 9414187428)
श्रीमती विभा आर्या, संयोजिका (मो0 : 9810054398)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन-२०१८ दिल्ली में

वानप्रस्थ और संन्यास-दीक्षा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली- 2018 में इस बार भी गत सम्मेलन की भांति वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा के लिए निःशुल्क वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा का भव्य कार्यक्रम आयोजित होगा। जो आर्य महानुभाव इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी वैदिक विद्वानों से वानप्रस्थ अथवा संन्यास की दीक्षा लेना चाहते हों, इस कार्यक्रम में सादर आमंत्रित हैं।

दीक्षा के इच्छुक महानुभाव कृपया अपना विवरण 'संयोजक, यज्ञ समिति' के नाम सम्मेलन कार्यालय-15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001 पर अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजें, ताकि उनके संस्कार की समस्त व्यवस्था बनाई जा सके।

-सम्मेलन संयोजक

ओ३म्
यज्ञ-योग और स्वाध्याय जीवन में अपनाएं - आर्यसमाज के साथ कदम से कदम बढ़ाएं
वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प को साथ लेकर
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में
भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018
दिल्ली (भारत)
25 से 28 अक्टूबर
2018
सम्मेलन स्थल :- स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-85
विश्व शान्ति यज्ञ, योग व तपोनिष्ठ संन्यासियों, वैदिक विद्वानों द्वारा सत्संग
तथा प्रवचन का लाभ उठाने हेतु लाखों की संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।
सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 9540029044
E-mail : aryasabha@yahoo.com, Website : www.aryamahasammelan.org, www.thearyasamaj.org
YouTube : thearyasamaj 9540045898

संक्षिप्त समाचार

संस्कृति रक्षा महायज्ञ

बागपत। ग्राम बड़हल में 13 से 14 अक्टूबर तक छठा संस्कृति रक्षा महोत्सव होगा, जिसमें ब्रह्मा आचार्य विनोद शास्त्री (बरनावा), स्वामी सत्यदेव, राजेन्द्र आर्य, कपिल आर्य, विदुषी आर्य के प्रवचन एवं भजनोपदेश होंगे।

२४ से होगा वार्षिकोत्सव

बिजनौर। 24-25 नवम्बर को गुरुकुल नवलपुर (बिजनौर) का वार्षिकोत्सव गुरुकुल प्रांगण में होगा।

आर्य सम्मेलन २० से

मेरठ (सुमन कुमार वैदिक)। 20 से 22 अक्टूबर तक ग्राम औरंगाबाद, राड़धना में आर्यसम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इसमें स्वामी राजेन्द्रदेव गुरुकुल, वीरेन्द्र शास्त्री (सहारनपुर), कुलदीप विद्यार्थी, ठा0 विक्रमसिंह, डॉ0 वरुणवीर सहित अनेक विद्वानों के प्रवचन होंगे।

गंगोह में वेद प्रचार

सहारनपुर। आर्य समाज गंगोह में चतुर्दिवसीय वेदप्रचार समारोह 20 से 23 सितम्ब तक मनाया गया, जिसमें आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी, पंडित देवेन्द्र दत्त सत्यार्थी व रामपाल आर्य के प्रवचन एवं भजनोपदेश से वैदिक धर्म का प्रचार किया गया।

विरजानन्द स्मृति दिवस

नई दिल्ली। आर्य समाज मन्दिर विकासपुरी द्वारा 25 सितम्बर को गुरु विरजानन्द स्मृति दिवस आर्य समाज के सामने पार्क में मनाया गया। मुख्य अतिथि धर्मपाल आर्य, प्रधान- दिल्ली सभा रहे।

२ से होगा वार्षिकोत्सव

दढ़ियाल (अमरोहा) उ.प्र.। आर्य समाज का वार्षिकोत्सव 2 से 4 नवम्बर 2018 तक होगा। प्रधान ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य के अनुसार इस अवसर पर आचार्य ब्रजेश, बहन सुलभा शास्त्री, रामगोपाल आर्य तथा जितेन्द्र आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं। समिति ने श्रद्धालुओं से भारी संख्या में भाग लेने की अपील की है।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिल्ली (आर्य रमेशचन्द्र आर्य)। आर्यसमाज राधापुरी का 63वां वार्षिकोत्सव 2 अक्टूबर को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर चारों वेदों के चुने हुए मंत्रों द्वारा आचार्य जयेन्द्र शास्त्री (गुरुकुल नोएडा) के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया। इस अवसर पर महेश आर्य आदि के भजनोपदेश हुए।

दढ़ियाल का उत्सव २ से

दढ़ियान (हसनपुर) अमरोहा। आर्य समाज का वार्षिकोत्सव 2 से 4 नवम्बर 2018 तक होगा। (ज्ञानेन्द्र आर्य, प्रधान, मोबा. : 9412493724)

महासम्मेलन ११ को

बरनाला (पंजाब)। आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के तत्वावधान में 11 नवम्बर 2018 को आर्य महासम्मेलन होगा।

चतुर्वेद पारायण एवं चिकित्सा महायज्ञ १४ से

सुमन कुमार वैदिक
मेरठ (उ.प्र.)।

ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने जो चारों वेदों के मंत्रों से एक ही समय एक ही स्थान पर चलाने की प्रेरणा अपने शिष्यों को दी, उस ज्योति को आचार्य अरविन्द शास्त्री रुकने नहीं देते। वर्ष में 11 स्थानों पर यज्ञ करने के पश्चात् 14 से 21 अक्टूबर तक त्यागी हॉस्टल, वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ में ग्यारह वेदियों पर चारों वेदों का महायज्ञ करा रहे हैं। इस यज्ञ में विशेष औषधियों से युक्त सामग्री तथा गोघृत से आहुतियां दी जाएंगी, जिससे प्रकृति की रक्षा होकर पर्यावरण शुद्ध हो और प्राकृतिक आपदाओं व गम्भीर रोगों से मुक्ति मिले।

डॉ0 अनिल कुमार, डॉ0 राहुल मेहरा, डॉ0 अरुण गोयल, डॉ0 तनुराज सिरोही, डॉ0 पंकज गोयल, डॉ0 सिद्धार्थ शर्मा जैसे मेरठ के ऐलोपैथिक चिकित्सक रोगियों का परीक्षण यज्ञ से पूर्व तथा यज्ञ के पश्चात् करेंगे।

यज्ञ में लक्ष्मीकांत वाजपेयी, राजेन्द्र अग्रवाल (सांसद, मेरठ), सत्यप्रकाश अग्रवाल (विधायक), डॉ0 हरिओम पंवार (कवि), सहित मेरठ के अनेक प्रतिष्ठित लोगों ने अपनी स्वीकृति दी है। यज्ञ प्रातः 7.30 से तथा सायं 3 बजे से होगा।

यज्ञ के आयोजक सुशील गुप्ता, डॉ0 अनिल कुमार, चन्द्रहास, अशोक सुधाकर आदि अनेक महानुभाव हैं।

अपने देश का वर्तमान बचाओ

मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। जो समाज व राष्ट्र अपने वर्तमान की समीक्षा नहीं करता, इतिहास तो उसका अनादर करता ही है, भविष्य भी उसके लिए दरवाजे बन्द कर देता है।

ये विचार कर्मवीर ने 'अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सजग हो जाओ' कार्यक्रम में गांधीवाटिका, गांधी कालोनी, मुजफ्फरनगर में 23 सितम्बर को आयोजित सभा में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि अपने सोए हुए सुविधावादी समाज को जगाने के लिए आप सभी धर्मरक्षक, राष्ट्ररक्षक, संस्कृति रक्षक, महानुभाव अपने कम्फोर्ट जोन को कुछ समय त्यागकर अपने व अपने देश के वर्तमान को बचाने के लिए तैयार हो जाओ।

उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा- ''वतन की फिक्र कर नादां, मुसीबत आने वाली है, तेरी बर्बादियों के मसविरे हैं आसमानों में। न संभलोगे तो मिट जाओगे हिन्दोस्तां वालों, तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में।।''

दान्दुपुर में होगा चतुर्वेद पारायण यज्ञ

सुमनकुमार वैदिक
मेरठ (उ.प्र.)।

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त द्वारा प्रज्वलित चतुर्वेद पारायण यज्ञों की ज्योति को उनके शिष्य शांत होने नहीं देते। 14 से 21 अक्टूबर तक मेरठ में चतुर्वेद पारायण यज्ञ चल रहा है। इसी कड़ी में आठवां चतुर्वेद यज्ञ ग्राम दान्दुपुर (मेरठ) में 18 से 24 अक्टूबर तक आयोजित किया जा रहा है, जिसके ब्रह्मा आचार्य गुरुवचन शास्त्री, बरनावा हैं। सात दिन में पांच वेदियों पर एक साथ पांच यजमानों द्वारा अलग-अलग वेदयज्ञ किया जाएगा। पूरा ग्राम इस यज्ञ में बड़ी श्रद्धा से सम्मिलित होता है।

मुख्य यजमान जयपाल सिंह ने बताया कि प्रति तीन वर्ष के पश्चात् चतुर्वेद यज्ञ तथा पारायण यज्ञ निरंतर होते रहते हैं। इस ग्राम में यज्ञ की अग्नि कभी समाप्त नहीं होती। अनेकों सफल पुत्रेष्टि यज्ञ यहां ब्रह्मचारी जी के शिष्य कराते आये हैं। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी जब 16 वर्ष की आयु के थे, तभी से यहां यज्ञ करने आने लगे थे। उस समय मवाना से पैदल या व्यक्तिगत साधन से आना होता था। सामग्री इत्यादि सामान मेरठ से स्वयं ब्रह्मचारी जी लाते थे तथा सवारी का इंतजार न कर स्वयं सिर पर सामान रखकर गांव में पहुंचाते थे।

योग प्रशिक्षण शिविर एवं वार्षिकोत्सव २९ से

रोहतक। स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा संस्थापित दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ की नवीन शाखा, दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर रोहतक, हरियाणा में तृतीय वार्षिकोत्सव 5 नवम्बर को मनाया जाएगा, जिसमें स्वामी विवेकानन्द जी, स्वामी आशुतोष जी, स्वामी शान्तानन्द जी, स्वामी सधानन्द जी, आचार्य संदीप जी, आचार्य दिनेश कुमार जी एवं आचार्य नवानन्द जी, रहेंगे।

इससे पूर्व 29 अक्टूबर से 4 नवम्बर तक क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर लगाया जाएगा।

आर्य महासम्मेलन ११ को

बरनाला (प्रेम भारद्वाज)। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि0), गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन 11 नवम्बर 2018 को बरनाला में आयोजित किया जा रहा है। सभा ने अपील की है कि पंजाब की समस्त आर्यसमाजें इन तिथियों में अपने-अपने आर्य समाज का अन्य कोई भी कार्यक्रम न रखें और इस आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए पूरी शक्ति से जुट जाएं। सभा की विज्ञप्ति में कहा गया है कि इससे पूर्व 17 फरवरी 2017 को लुधियाना और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सफल आर्य महासम्मेलनों का आयोजन कर चुकी है।

स्वनामधन्य- आर्यरत्न, तपोनिष्ठ

महाशय सत्यप्रकाश जी आर्य

जन्मशती वर्ष : 25 दिसम्बर 2017-18

स्मारिका का भव्य प्रकाशन

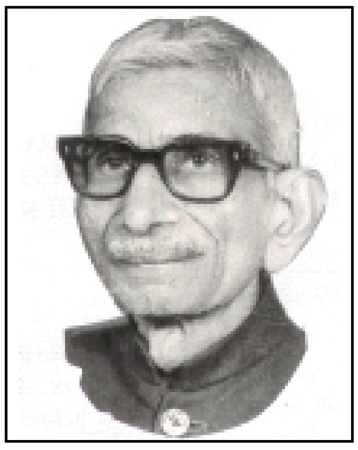

स्वनामधन्य उदारमना, आर्यरत्न, प्रखर समाजसेवी **महाशय सत्यप्रकाश जी आर्य** आजीवन आर्यसमाज, गुरुकुल तथा वैदिक संस्थाओं के प्रति समर्पित रहे। वैदिक धर्म, महर्षि दयानन्द के मिशन व आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए उनका योगदान अतुलनीय रहा। वे आर्यसमाज के लिए सर्वस्व समर्पित करने के लिए सदैव उद्यत रहते थे। **उनको केवल एक ही चिन्ता थी कि आर्य समाज का प्रसार अधिक से अधिक कैसे हो।**

हम सभी के लिए यह गौरव की बात है कि **२५ दिसम्बर २०१७-१८** पूज्य महाशय जी का जन्मशती वर्ष है। इस पुनीत अवसर पर **आर्यावर्त प्रकाशन** द्वारा बड़े स्तर पर एक **भव्य एवं यादगार स्मारिका** का प्रकाशन किया जाएगा, ताकि वर्तमान तथा आगे आने वाली संततियाँ महाशय जी जैसे महामानवों के प्रति गर्व कर सकें। निश्चय ही ऐसी देवतुल्य विभूतियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से राष्ट्र व समाज को एक रचनात्मक दिशा मिलती है। विश्वास है कि यह स्मारिका इस दिशा में एक मील का पत्थर सिद्ध होगी। बड़ी प्रसन्नता है कि महाशय जी के सुपुत्र प्रिय भ्राताश्री **विनय प्रकाश जी आर्य** एवं **पौत्र अभय आर्य** आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त प्रकाशन एवं आर्य समाज के मिशन के लिए निरन्तर सहयोग प्रदान करते रहते हैं। उनके सहयोग से जनहितकारी तथा आत्मकल्याणकारी उत्कृष्ट साहित्य का प्रकाशन भी किया जाता रहता है।

महाशय जी से जुड़े विद्वान लेखकों तथा आर्यसमाज एवं समाज के विभिन्न घटकों, संस्थानों से जुड़े विज्ञ महानुभावों से अनुरोध है कि वे अपनी सशक्त लेखनी से महाशय जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपने लेख, संस्मरण तथा रचनाएं आदि यथाशीघ्र प्रकाशनार्थ भेजें। धन्यवाद,

-: निवेदक :-

हरिश्चन्द्र आर्य	**विनय प्रकाश आर्य- अंजु आर्या**	**डॉ. अशोक आर्य**
मार्गदर्शक	मुख्य समन्वयक	सम्पादक
उषा आर्या	**अभय आर्य- तूलिका आर्या**	**डॉ. बीना रुस्तगी**
मुख्य संयोजक	अतिथि सम्पादक	प्रबन्ध सम्पादक

'आर्य समाज के गौरव' ग्रंथ का प्रकाशन

ठाकुर विक्रम सिंह जी द्वारा 'आर्य समाज के गौरव' नाम से एक ऐतिहासिक ग्रन्थ, जो हर दृष्टि से संग्रहणीय, प्रशंसनीय तथा अवलोकनीय होगा, प्रकाशित किया जा रहा है। इस ग्रन्थ में ऐसे 100 व्यक्तित्व, जिन्होंने महर्षि दयानन्द के सिद्धांतानुसार जीवन का अनुसरण करते हुए आर्य समाज का गौरव बढ़ाया है, का जीवन चरित्र, कृतित्व, रंगीन फोटो सहित समाहित होगा। इनमें आर्य जगत के संन्यासी, महोपदेशक, भजनोपदेशक, विदुषी महिलाएं, राजनेता, शिक्षाविद्, लेखक, समाजसेवी, दानी एवं उद्योगपति आदि सम्मिलित होंगे, जिनकी आयु 40 वर्ष से ऊपर हो।

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट, ए-41, लाजपतनगर II,
निकट- मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली- 24,
फोन : 011-45791152, 29842527, 9313254938

आर्ष साहित्य बिक्री केन्द्र

समस्त प्रकार का आर्ष साहित्य- वेद, उपनिषद, दर्शन, ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, जीवन परिचय, सम-सामयिक साहित्य सहित पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य एवं ओ३म ध्वज, पट्टिकाएं, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

व्यवस्थापक- आर्यावर्त प्रकाशन
गोकुल विहार, अमरोहा (उ0प्र0)-२४४२२१
फोन : 05922-262033 / 09412139333

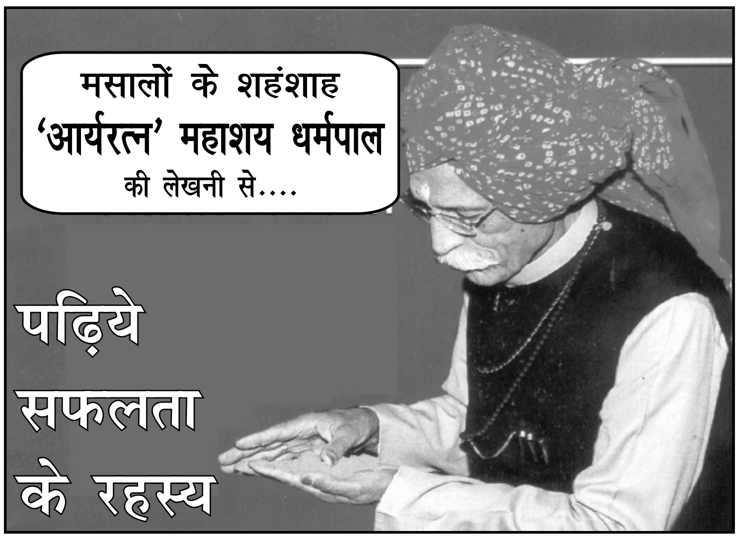

कैसे पाएं सफलता

यह तो आप सभी जानते ही हैं कि मसाला उद्योग जगत में एमडीएच ब्रांड मसालों की अपनी एक अलग पहचान है। शुद्धता और गुणवत्ता की जब कहीं चर्चा होती है, तो लोग एमडीएच प्रोडक्ट को एक मिसाल के रूप में पेश कर देते हैं। अपने मुंह से यहां कहने में तो मुझे थोड़ा संकोच जरूर हो रहा है, मगर हकीकत यही है कि इसके पीछे मसालों के करोबार की जो मेरी अच्छी सूझ-बूझ है, उसकी सबसे बड़ी भूमिका है। देश के बंटवारे के पहले जब हम अपनी जन्मभूमि सियालकोट में थे, तो वहां बाजार पंसारियां में हमारे पिताजी का मसालों का कारोबार था, हमारी अपनी दुकान थी। चूंकि बचपन में मेरा मन पढ़ाई में लगता नहीं था और पिताजी का विचार था कि जिस काम में मन न लगे, उसे छोड़ देना ही बेहतर है, इसलिए मैंने उनकी रजामंदी से पांचवी क्लास का इम्तहान दिए बिना ही स्कूल को नमस्कार कर लिया। इसके बाद दो साल तक मुनीमी स्कूल में हिसाब-किताब की पढ़ाई का इंतजाम पिताजी ने कर दिया, ताकि मैं कारोबार के नफा-नुकसान को समझने की काबिलियत पा सकूं। फिर मैं पिताजी के साथ मसालों के काम में ही लग गया। उनके साथ रहकर मसालों की क्वालिटी की परख, मसालों की पिसायी, मसालों के पैकेट तैयार करना, माल का ऑर्डर बुक करना, सप्लाई करना इन सभी कामों का तजुर्बा मुझे उस छोटी उम्र में ही हो गया।

इसी बीच एक देश के दो टुकड़े हो गए और हमें अपना वजूद कायम रखने के लिए पाकिस्तान स्थित अपनी जन्म भूमि जहां मुसलमानों का बोलबाला था, छोड़कर हिंदुस्तान मे एक नयी जगह पर यहां दिल्ली में शरण लेनी पड़ी। उन दिनों भी तांगा चलाने से लेकर कई तरह के कामों में हमने अपना नसीब आजमाया, मगर योग्यता के अभाव में बात नहीं बना पायी और आखिरकार मुझे फिर मसालों के काम को ही अपनाना पड़ा। फिर परमात्मा की ऐसी कृपा बरसी कि इस काम के जरिए मैंने मसाला उद्योग जगत में ही एक कीर्तिमान कायम कर डाला।

योग्यता के अभाव में जिंदगी बोझ बनकर रह जाती है, इसलिए योग्य बनें। जिस क्षेत्र में आप आगे बढ़ना चाहते हो, उसे ध्यान में रखते हुए खुद में काबिलियत लाएं। ज्यादा बेहतर तो यही होगा कि किशोरावस्था में ही अभिभावक बच्चे की रूचि व क्षमता को ध्यान में रखकर उसे संबंधित क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें और इसके लिए योग्यता हासिल करने में मदद करें।

सफलता प्राप्ति के लिए कुछ सूत्रों पर ध्यान दें, सफलता अवश्य मिलेगी-

- अपना एक लक्ष्य तय करें, फिर उसके मुताबिक योग्यता हासिल करने का दृढ़ संकल्प लें।
- अहंकार को खुद पर हावी होने का मौका न दें। जब भी, जहां भी, जिससे भी कुछ सीखने का मौका मिले, विनम्र बनकर मौके का लाभ उठाएं।
- छोटी- से-छोटी जानकारी को भी नज़रअंदाज न करें, बहुत बड़ी मशीन को चालू करने के लिए भी सबसे पहले पॉवर वाला छोटा बटन दबाना जरूरी होता है।
- आपके पास क्या नहीं है, इसे लेकर अफसोस करने की बजाय उसे पाने के लिए उत्साहपूर्वक प्रयास करें।
- संबंधित क्षेत्र की अच्छी जानकारी रखने वालों से मेल-जोल बढ़ाएं उनकी संगति में रहकर भी आप आसानी से बहुत कुछ सीख सकते हैं।
- वक्त के पाबंद बनें। एक-एक पल को बहुमूल्य समझकर उसका सदुपयोग करें।
- निराशा को नजदीक न आने दें। कामयाबी मिलेगी ही-इस विश्वास के साथ कदम बढ़ाएं। कर्म में, संघर्ष में पूरी आस्था रखें।

वास्तव में कहा गया है कि पहले योग्य बनो, फिर उम्मीद करो। मतलब यह कि किसी भी क्षेत्र में कदम जमाना हो, तो उसके लिए उस क्षेत्र से संबंधित अच्छी जानकारी होना जरूरी है। आप यह समझ लें कि योग्यता को ही आदर मिलता है, वरना दो हाथ, दो पैर, दो आंखे, दो कान, जुबान और दिमाग तो परमात्मा ने सभी को दिए हैं। एक आदमी दिन-रात पत्थर तोड़ता अपने नसीब को कोस रहा है, तो दूसरा आदमी राष्ट्राध्यक्ष बना करोड़ों लोगों को नेतृत्व कर रहा है।

टंकारा चलो : आर्यावर्त केसरी के संयोजन में

टंकारा, अहमदाबाद, द्वारिकापुरीधाम, पोरबंदर तथा सोमनाथ आदि

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा कार्यक्रम-2019

कार्यालय- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- 26 फरवरी से 06 मार्च 2019 तक

प्रस्थान : 26 फरवरी 2019 को प्रात: 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप द्वारा। (25 फरवरी 2019 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मंदिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद)

वापसी : 06 मार्च 2019 को अमरोहा सायं 5:45 बजे आला हज़रत एक्सप्रेस से।

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

- **अहमदाबाद, आर्यवन-रोजड़-** साबरमती आश्रम, अक्षरधाम, वानप्रस्थ साधक आश्रम, गुरुकुल आर्यवन आदि।
- **द्वारिकापुरीधाम-** चार धामों में से एक धाम द्वारिकाधीश मंदिर, गोमती गंगा, श्री कृष्ण महल, भेंटद्वारिका, रुक्मणी मन्दिर, गोपी तालाब, आदि।
- **नागेश्वर महादेव-** द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक नागेश्वर महादेव।
- **पोरबन्दर-** महात्मा गांधी का जन्मस्थल, आर्ष कन्या गुरुकुल, सुदामा महल, नक्षत्रशाला, भारतमाता मंदिर आदि।
- **भालका तीर्थ-** वह ऐतिहासिक स्थली, जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण को तीर लगा था।
- **सोमनाथ तीर्थ तथा दीव-** ऐतिहासिक सोमनाथ मन्दिर तथा समुद्र दर्शन एवं 'लाइट एंड साउंड शो' का दिग्दर्शन।
- **ऋषि जन्मभूमि टंकारा-** महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली, ऐतिहासिक शिवालय, पावन नदी, गोशाला, टंकारा ट्रस्ट भवन तथा आर्यसमाज का परिभ्रमण एवं बोधोत्सव में सहभागिता।

: सहयोग राशि :

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी- प्रबंध समिति द्वारा होगी।

इस यात्रा निमित्त कुल धनराशि रु० 4500/- (सीनियर सिटीजन के लिए रु० 4000/-) देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 2000/- की धनराशि दिनांक- 26 अक्टूबर 2018 तक नकद या आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट/चैक द्वारा कार्यालय के पते पर भेजनी आवश्यक होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। इसी प्रकार जो महानुभाव AC III व AC II में यात्रा करने के इच्छुक हों, उनके लिए भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। वातानुकूलित श्रेणी के लिए कुल धनराशि रु० 5700/- (सीनियर सिटीजन के लिए रु० 5200/-) देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 3000/- की धनराशि अग्रिम देय होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। यह धनराशि आपके द्वारा 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक शाखा- अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या- 30404724002, IFSC Code SBIN0000610 में जमा करायी जा सकती है। प्रदत्त धनरशि की रसीद कार्यालय द्वारा आपको तत्काल प्रेषित की जाएगी। विलम्ब से प्राप्त धनराशि की दशा में रिजर्वेशन सुनिश्चित नहीं हो पाते, जिससे भारी असुविधा हो सकती है। इसलिए जितनी शीघ्रता हो सके, अपनी धनराशि जमा करा दें। समुचित व्यवस्था में आपका पूर्ण सहयोग प्रार्थनीय है।

-: यात्रियों को आवश्यक निर्देश :-

● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, परिचय-पत्र (आईडी प्रूफ), दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, यह भी सूचित करें।

नोट :

१. परिस्थितिवश यात्रा की तिथियों तथा परिभ्रमण-स्थलों में आंशिक परिवर्तन का अधिकार संयोजक को होगा। २. यात्रा रेलगाड़ी तथा डीलक्स बसों द्वारा संपन्न होगी। ३. आवासीय व्यवस्था ट्रस्ट अथवा तीर्थस्थलों पर उपलब्ध व्यवस्था के अन्तर्गत रहेगी। यदि कोई महानुभाव होटल में रुकना चाहते हों, तो इस सुविधा के लिए होटल का वास्तविक शुल्क अलग से देय होगा, जिसके लिए पूर्व में अवगत कराना होगा, अथवा यह व्यवस्था यथासंभव उपलब्धता पर निर्भर रहेगी। कोटिशः धन्यवाद;

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का पावन कार्यक्रम बनाएं...

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, यात्रा संयोजक एवं संपादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कालोनी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ०प्र०)- 244221
(चलभाष : 09412139333, 8630822099)

❒ हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412), ❒ अभय आर्य (9927047364),
नरेन्द्रकांत गर्ग- व्यवस्थापक (09837809405),
❒ सुमन कुमार वैदिक- सह व्यवस्थापक (09456274350)

आर्यवन आर्ष कन्या गुरूकुल, रोजड़ (गुजरात)

विश्वप्रसिद्ध आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट के द्वारा अब वैदिक विदुषियों के निर्माणार्थ 'आर्यवन आर्ष कन्या गुरूकुल' की स्थापना लगभग १ एकड़ भूमि पर की गयी है। गुरूकुल के भवन का निर्माण हो रहा है, जो हवा-उजास युक्त छात्रावास, संगणक, दूरभाष, प्रोजेक्टर, इन्टरनेट आदि आधुनिक सुविधाओं से युक्त कार्यालय व अध्ययन कक्ष, वैदिक साहित्य से संपन्न पुस्तकालय, रसोईघर, भोजनालयादि से युक्त है। चारदिवारी से घिरे हुए गुरूकुल के सुरक्षित परिसर में छात्राओं के व्यायाम, भ्रमणादि के लिए विशाल मैदान है, जो विविध प्रकार से औषधियों पेड़ों से सुसज्जित है।

आर्यवन आर्ष कन्या गुरुकुल केवल आर्ष पाठ्यक्रम से चलने वाला एक प्रमुख कन्या गुरूकुल है। सात्विक दिनचर्या के साथ सत्यार्थ प्रकाश में निर्दिष्ट आर्ष पाठ्यक्रम के अनुसार अध्ययन अध्यापन यहां की खास विशेषता है।

भव्य यज्ञशाला

प्राकृतिक वातावरण के बीच विशाल यज्ञशाला भी है, जिसमें प्रातः-सायं दोनों समय वैदिक मंत्रों के मधुर उच्चारण व स्वाहाकार की ध्वनि के साथ रोगनाशक व पुष्टिकारक आयुर्वैदिक औषधि तथा देशी गाय के घृत की आहुति से अग्निहोत्र होता है।

गौशाला

ट्रस्ट द्वारा गौशाला की व्यवस्था भी है। यहां से प्राप्त गीर की देशी गायों के शुद्ध दूध व घृत से निर्मित सात्विक आहार का आनन्द ही अद्‌भुत है।

गुरुकुल का पाठ्यक्रम

गुरूकुल के पूर्ण कालीन आवासीय इस पाठ्यक्रम में मुख्य रूप से पाणिनीय अष्टाध्यायी के क्रम से महाभाष्य पर्यन्त सम्पूर्ण संस्कृत व्याकरण, निरूक्त, छन्दः शास्त्र तथा सांख्य-योग-वैशेषिक-न्याय-मीमांशा वेदान्त इन छह आर्ष दर्शनों के गंभीर अध्यापन के साथ-साथ वेद, महर्षि दयानन्द के ग्रन्थ तथा अन्य वैदिक साहित्यों का स्वाध्याय भी होगा। इसके अतिरिक्त छात्राओं को योगदर्शन में वर्णित क्रियात्मक योग प्रशिक्षण भी सिखाया जाता है।

गुरूकुल के नियम व व्यवस्था

1. छात्रा न्यूनतम 10वीं कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होनी चाहिए।
2. गुरूकुल का पाठ्यक्रम पूर्णकालीन आवासीय अध्ययन है।
3. छात्रा की गुरूकुल का पाठ्यक्रम पढ़ने में रूचि व योग्यता होनी चाहिए।
4. माता-पिता, अभिभावक को प्रवेश के लिए छात्रा के साथ आना अनिवार्य है। साथ न आ सकने की स्थिति में उन्हें कोई वैकल्पिक व्यवस्था करनी होगी।
5. छात्रा का स्वास्थ्य ठीक हो, गंभीर रोग से ग्रस्त न हो।
6. छात्रा को बिना अनुमति के बाहर जाना मना है।
7. गुरूकुल वास पर्यन्त छात्रा को घर जाने की अनुमति नहीं है।
8. गुरूकुल वास पर्यन्त छात्रा को गुरूकुल से बाहर पढ़ने व परीक्षा देने की अनुमति नहीं है।
9. पूर्व सूचना एवं स्वीकृति के पश्चात् माता-पिता, अभिभावक छात्रा को मिलने के लिए गुरूकुल आ सकते हैं तथा पूर्व निर्धारित दूरभाष से बात कर सकते हैं।
10. छात्रा को बिना अनुमति के माता-पिता, अतिथि, आगन्तुकों से बात करने अनुमति नहीं है।
11. छात्रा के लिए पूर्ण निष्ठा से दिनचर्या का पालन अनिवार्य है।
12. छात्रा को मोबाइल, लैपटॅाप, आइ-फोन, आई-पेड, हार्डडिस्क, पेनड्राइव, पैसे आदि रखने की अनुमति नहीं है।
13. छात्रा गुरूकुल से प्राप्त कपड़े ही पहनेगी।
14. छात्रा के द्वारा अनुशासन का उल्लंघन करने पर प्रधानाचार्या अनुशासन सम्बन्धित आपेक्षित कार्यवाही करने में पूर्ण स्वतन्त्र हैं।

नियमित स्तंभ : 'हमारे गुरुकुल'

आर्यावर्त केसरी भारतवर्षीय गुरुकुलों पर शीघ्र ही एक भव्य विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है। साथ ही, 'हमारे गुरुकुल स्तंभ' के अन्तर्गत भारत के गुरुकुलों के विषय में मूल्यवान परिचियात्मक सामग्री प्रकाशित की जा रही है। अतः गुरुकुलों के संस्थापकों, अधिष्ठाताओं, कुलपतियों तथा आचार्यजनों से अनुरोध है कि अपने गुरुकुलों का इतिवृत्त (संक्षिप्त परिचय) चित्र सहित यथाशीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि इनका समुचित समायोजन करते हुए विशेषांक को भव्य स्वरूप प्रदान किया जा सके। धन्यवाद, —सम्पादक

वर चाहिए

दिल्ली निवासी सुश्री शैली, तलाकशुदा, कद 5'2'' रंग गोरा, जन्म 27/10/1983 एम0ए0बी0एड0, एम0सी0डी0 दिल्ली में असिस्टेंट टीचर, पूर्णतः शाकाहारी, पिता सरकारी सेवा से रिटायर्ड, एक भाई हेतु सुयोग्य व्यवसायी/ सेवारत वर की आवश्यकता है। कोई जाति-बन्धन नहीं। दहेज रहित विवाह। सम्पर्क करें- 9899252879, 9873133647

वर चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, जन्म- 12 मई 1992, कद- 5 फुट 6 इंच, शिक्षा- बी.टेक, हिन्दुस्तान ऐरोनोटिक्स में मैनेजर युवती हेतु आर्यसमाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए।

सम्पर्क- 8368508395, 9456274350

वधु चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, आयु-28 वर्ष, कद- 5 फुट 8 इंच, शिक्षा- एम.बी.ए., प्रोफेसर, व्यापार में संलग्न युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क- 9456804666

वधु चाहिए

धनौरा का प्रतिष्ठित आर्य अग्रवाल वैश्य परिवार, संस्कारित, आयु-35 वर्ष (तलाकशुदा), कद- 5 फुट 10 इंच, शिक्षा- एम.ए., पीएच.डी. हिन्दी, स्ववित्तपोषित महाविद्यालय में प्रवक्ता हेतु आर्यसमाजी परिवार की संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क- 8923285659

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए, और चुनिए एक सुयोग्य जीवन-साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.) (चलभाष : 09412139333)

सूचना

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2018 के चित्रों को देखने और डाउनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से https://www.facebook.com/AjayTankarawala/ पर जाएं और लाइक व शेयर अवश्य करें।

-अजय सहगल

ऋग्वेद

।। ओ३म् ।।

यजुर्वेद

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभावों को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ है तथा इसका मूल्य 150/- प्रति ग्रन्थ है।

सत्यार्थ प्रकाश का एक और नवीन संस्करण प्रकाशित

साइज़ - 18 x 23 x 8

मूल्य- अजिल्द- 60

सजिल्द- 70

दानदाताओं तथा सहयोगी महानुभावों के चित्र प्रकाशन की सुविधा। जन-जन तक पहुंचाएं ऋषिवर दयानन्द का यह क्रान्तिकारी ग्रन्थ

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221

Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद

अथर्ववेद

इतिहास के झरोखे से

कूद पड़े नेता जी सुभाष चन्द्र बोस

डॉ० महावीर सिंह

लाहौर कांग्रेस के प्रस्ताव के अनुसार 26 जनवरी, 1930 स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता था। सुभाष बाबू तो थे ही आजादी के दीवाने अत: कलकत्ता में एक विशाल जुलूस निकालने की योजना बनाई गई। इस जुलूस की तैयारियों को देखकर ही अंग्रेज सरकार घबरा गई। कलकत्ता के हाईकमिश्नर ने जुलूस पर प्रतिबंध लगा दिया। प्रतिबंध का नाम सुनकर कई नेता घबरा गए, किन्तु वाह रे सुभाष! वीर पुरुष को तो बाधाओं से लड़ने में ही मजा आता है, उनको प्रत्येक बाधा चुनौती लगती है। सुभाष ने जुलूस के नेतृत्व का निर्णय

लिया। सुभाष बाबू का निश्चय सुनते ही जन-जन जाग उठा। प्रतिबंध के कारण आई शिथिलता तिरोहित हो गई। निश्चित दिन आ गया। कलकत्ता कार्पोरेशन आफिस के अहाते से जुलूस गगन भेदी नारे लगाते हुए चल पड़ा। चौरंगी स्ट्रीट से होता हुआ आगे बढ़ा। आगे-आगे भारत माँ का सिंह सपूत सुभाष और उसके पीछे हजारों नर-नारियों का समूह। पुलिस कहती कि आगे न बढ़ना। जनता कहती आगे बढ़ेंगे। सुभाष जी ने आगे कदम बढ़ाया कि सैकड़ों नर-नारी चल पड़े आगे को। पुलिस ने भी अपना जघन्य काम शुरू कर दिया। भांजी जाने लगीं लाठियां। अनेक लोग लहुलूहान को गए, पर जुलूस सुभाष जी को घेरे आगे ही बढ़ता गया। दीवानों पर लाठी प्रहार होते रहे पर आगे बढ़ते गए। पुलिस ने सुभाष पर भी लाठी प्रहार किए और उन्हें भी लहू से तरबतर कर दिया। सारी धरती लाल हो गई। सुभाष बाबू गिरफ्तार कर लिए गए। किन्तु सुभाष नारे लगाते रहे भारत माता की जय। स्वतंत्र होकर रहेंगे........।

मैं नींव का पत्थर बना रहना चाहता हूं

जब लालबहादुर शास्त्री लोकसेवा मंडल के अध्यक्ष बने तो वे बहुत संकोची हो गए। वे नहीं चाहते थे कि उनका नाम समाचार पत्रों में छपे और लोग उनकी प्रशंसा व स्वागत करें। एक दिन शास्त्री जी के कुछ मित्रों ने उनसे पूछा-

"शास्त्री जी आपको समाचार पत्रों में नाम छपवाने से इतना परहेज क्यों?"

शास्त्री जी कुछ सोचकर बोले- "लाला लाजपत राय ने लोक सेवा मंडल के कार्य की दीक्षा देते हुए कहा था- 'लाल बहादुर, ताजमहल में दो प्रकार के पत्थर लगे हैं एक बढ़िया संगमरमर के पत्थर हैं, जिन्हें सारी दुनिया देखती है और प्रशंसा करती हैं। दूसरे वे पत्थर हैं जो ताजमहल की नींव में लगे हैं, जिनके जीवन में अंधेरा ही अंधेरा है। किन्तु ताजमहल को उन्होंने ही खड़ा रखा है। लाला जी के शब्द हर समझ मुझे याद रहते हैं। मैं नींव का पत्थर बना रहना चाहता हूँ'।

-अमरोहा

सद्विचारों का प्रचारक-प्रसारक ग्रन्थ है सत्यार्थप्रकाश

ज्वलन्त शास्त्री

वस्तुओं के अलावा प्रसाद बेचने वाले बाबाओं का गिरोह भी सक्रिय है। ऑनलाइन प्रसाद बेचने वाले लोग अयोध्या, बोधगया, पुष्कर, रामेश्वरम्, द्वारिका, हरिद्वार, कालीघाट, प्रयाग, गोदावरी जैसे जगहों पर ब्राह्मणों को भोजन खिलाने के नाम पर 600 से 3000 रुपये तक दान में लेते हैं। भोजन खिलाकर पुण्य कमाने के लालच में लोग अंधाधुन्ध पैसा बहा रहे हैं। ज्योतिष के नाम पर कमाई करने वाले नामी-गिरामी बाबाओं से ऑनलाइन सलाह देने के नाम पर पैसा लूटा जा रहा है। बाद में इन्हीं तथाकथित ज्योतिषियों के अनुसार ऑनलाइन अंगूठी, रुद्राक्ष, नग तथा चमत्कारी चीजों की खरीदारी करनी पड़ती है। धर्म के नाम पर ऑनलाइन ठगी करने वाले धार्मिक जगहों के नाम पर गृहदोष निवारण, पति-पत्नी में अनबन आदि को लेकर पूजापाठ कराने के लिए घर बैठे 5 हजार से 25 हजार रुपये तक की वसूली कर रहे हैं। इनके एजेंट देश में कोने-कोने में फैले हुए हैं। धर्म के नाम पर फांसने वाली कम्पनियां कई बार यह भी झांसा देती हैं कि लाभ नहीं होने की स्थिति में आप सामान कम्पनी को लौटाकर अपनी रकम वापस ले सकते हैं। लोगों को विश्वास दिलाया जाता है कि यदि कम्पनी फर्जी होती, तो पैसा लौटाने का वादा नहीं करती। यह कहकर भी डराया जाता है कि सामान लौटाने पर नुकसान भी हो सकता है। अब यह भी जान लें कि इनके कारोबार का फंडा क्या है। ताबीज, रत्न, चमत्कारी यंत्र अथवा रुद्राक्ष बेचने वाले ये ठगबाज बार-बार यही दोहराते हैं कि इन्हें विशेष मुहूर्त, विशेष योग व नक्षत्र में सिद्ध किया गया है। ये इतने शक्तिशाली हैं कि इन्हें धारण करते ही हर समस्या पलक झपकते ही दूर हो जाएगी। मनचाही मुराद पूरी हो जाएगी व आप हर पीड़ा से मुक्त हो जाएंगे। अगर इन सब बातों में सच्चाई है, तो ये लोग ऐसा क्यों नहीं करते कि पहले काम की गारंटी, बाद में पैसों का भुगतान करें। उन्हें अच्छी तरह पता है कि एक बार कोई व्यक्ति जाल में फंसा, तो वह उस वस्तु पर आंख मूंद कर भरोसा कर लेता है, चाहे काम बने या न बने। फंसने के बाद इसे अहसास भी हो जाता है कि उसके साथ ठगी हुई है। लेकिन समाज में उसकी मूर्खता उजागर न हो जाए, इसलिए वह मुंह बन्द रखने में ही अपनी भलाई समझता है। अगर आप भी ठगी का शिकार हुए हैं, तो लोगों को जरूर सावधान करिए। लोगों को धर्म का वास्तविक स्वरूप, सच्चा धार्मिक अनुष्ठान या वास्तविक कर्मकाण्ड की जानकारी के लिए ऋषि दयानन्द का सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि ग्रन्थ स्वयं पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइए। धर्म के नाम पर पाखण्ड, अन्धविश्वास, कुरीतियों और प्रत्येक प्रकार के शोषण के खण्डन तथा वास्तविक धर्म, दर्शन और सद्विचारों का प्रचारक-प्रसारक ग्रन्थ का नाम सत्यार्थप्रकाश है।

कन्या गुरुकुल नवलपुर (बिजनौर) उप्र
आवश्यकता है

बिजनौर मीरापुर रोड पर गंगनहर के किनारे शान्त स्थान पर स्थित कन्या गुरुकुल नवलपुर में प्रवेश प्रारम्भ हैं। साथ ही अंग्रेजी पढ़ाने के लिए अध्यापिका की आवश्यकता है।

-प्रबन्धक/ प्रधानाचार्य, दूर : 8218138879

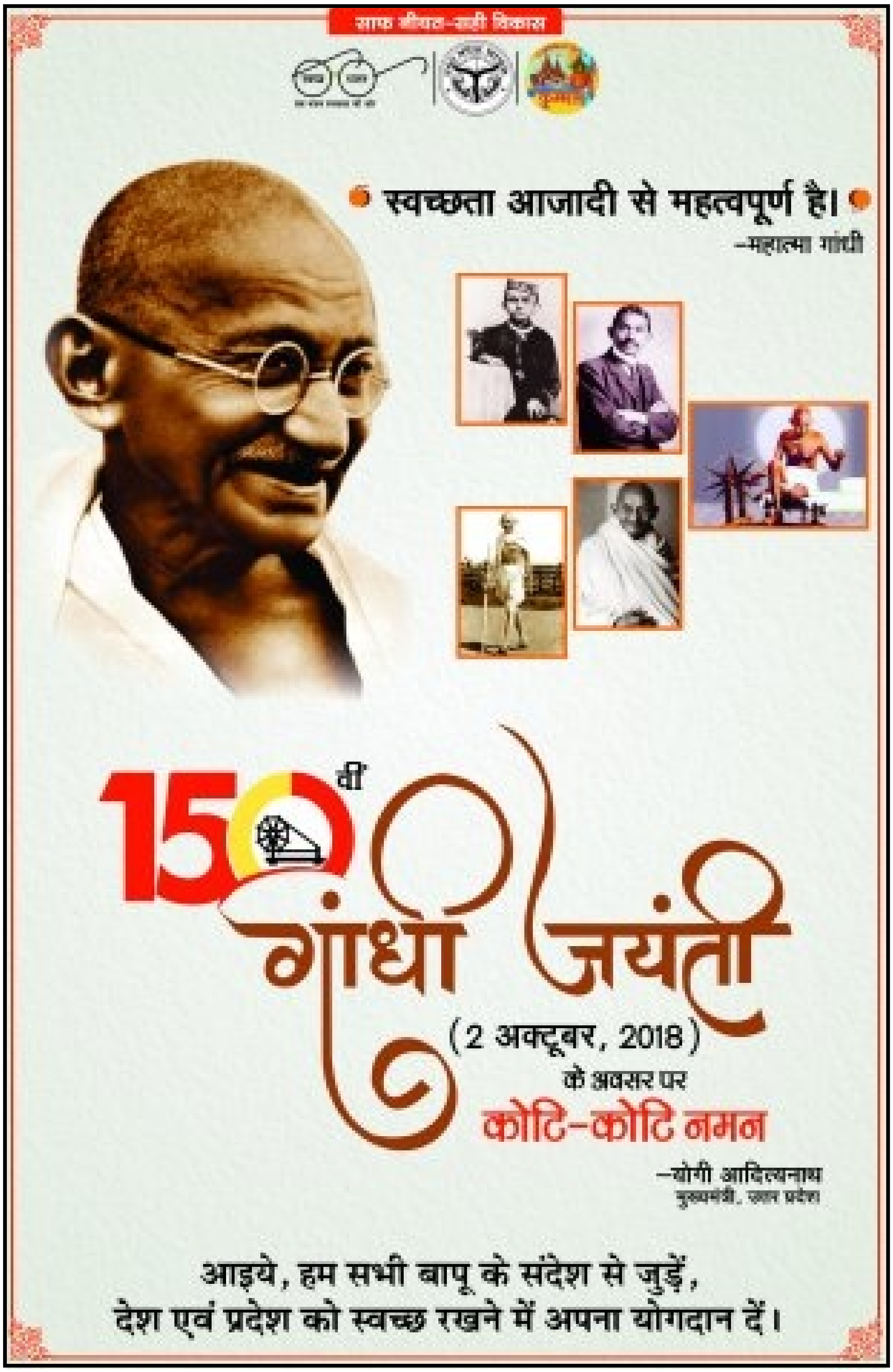

वैदिक संस्कृति के पोषक, उन्नायक तथा संरक्षक

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम वैदिक संस्कृति के पोषक, उन्नायक तथा संरक्षक थे। उनका जीवन यज्ञमय था। राम ने आततायी वंश का विनाश कर, आयावर्त देश की चक्रवर्ती शासन की परम्परा का पुनरुद्धार किया। वैदिक संस्कृति के उत्थान तथा प्रचार–प्रसार के साथ ही उन्होंने समाज में मर्यादाओं की स्थापना की। युग–प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में वैदिक धर्म व संस्कृति के उन्नयनार्थ बालक–बालिकाओं व विद्यार्थियों के लिए जो पाठविधि दी है उसमें उन्होंने वाल्मीकि रामायण को भी सम्मिलित किया है। उन्होंने लिखा है कि 'मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण और महाभारत के उद्योगपर्वान्तर्गत विदुरनीति आदि अच्छे–अच्छे प्रकरण जिनसे दुष्ट व्यसन दूर हों और उत्तम सभ्यता प्राप्त हो, को काव्यरीति से अर्थात् पदच्छेद, पदार्थोक्ति, अन्वय, विशेष्य विशेषण और भावार्थ को अध्यापक लोग जनावें और विद्यार्थी लोग जानते जायें।' महर्षि दयानन्द की, इन पंक्तियों से यह विदित होता है कि वह चाहते थे कि भारत का बच्चा–बच्चा मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के जीवन चरित्र से परिचित हो और अपने जीवन और व्यवहार में अनको अपना आदर्श मानकर उनका अनुकरण करें। यह सुविदित तथ्य है कि वाल्मीकि रामायण में महाभारतकाल के बाद अनेक प्रक्षेप व क्षेपक डाल दिये गये। अतः रामायण का शुद्ध स्वरूप बालकों व विद्यार्थियों तक लाने के लिए आर्यसमाज के विद्वानों स्वामी जगदीश्वरानन्द और महात्मा प्रेमभिक्षु ने वाल्मीकि रामायण के शुद्ध व ऐतिहासिक तथ्यों से युक्त भव्य, प्रभावशाली व संक्षिप्त संस्करणों का रामायण नाम से ही सम्पादन किया जिसे न केवल भारतीय अपितु विश्व के सभी लोगों को पढ़ना चाहिये। हमारे साहित्य में ऐसा प्रसंग आता है कि महर्षि वाल्मीकि ने नारद मूनि से पूछा कि इस संसार में वीर, धर्म को जानने वाला, कृतज्ञ, सत्यवादी, सच्चरित्र, सब प्राणियों का हितकारी, विद्वान, उत्तम कार्य करने में समर्थ, सब के लिए प्रिय दर्शन वाला, जितेन्द्रिय, क्रोध को जीतने वाला, तेजस्वी, ईर्ष्या न करने वाला, युद्ध में क्रोध आने पर देव भी जिससे भयभीत हों, ऐसा मनुष्य कौन है?तब नारद मुनि ने उन्हें ऐसे ही अनेक गुणों से युक्त महामानव श्रीराम का वृतान्त सुनाया।

वास्तव में हमारी नई पीढ़ी को जानना चाहिए कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम बड़े प्रतापी, सहनशील, धर्मात्मा, प्रजापालक, निष्पाप, एवं एक निष्कलंक राजा थे। उन्होंने मानव समाज के लिए आदर्श व्यवहार की उच्चतम मर्यादाएं स्थापित कीं।

ईश्वर है एक किन्तु नाम हैं अनेक

खुशहाल चन्द्र आर्य

यह लेख मैंने 'आर्य मान्यताएं' शीर्षक पुस्तक, जिसके सम्पादक आचार्य राजवीर जी शास्त्री हैं और प्रकाशक आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट है, से लिया है, जो अति पठनीय है तथा पाठकों के लिए अति जानकारी का विषय है। पाठकगण इस लेख को पढ़कर काफी ज्ञानवर्द्धन करेंगे। इसी उद्देश्य से यह लेख लिखा है।

ईश्वर एक है, अनेक नहीं :

वेद और वेदानुकुल सभी ग्रन्थों में ऐसा ही लिखा है। एक ईश्वर ही अनेक नामों से पुकारा जाता है। प्रत्येक नाम उसके किसी न किसी गुण को प्रकट करता है, जैसे–

ब्रह्म= सबसे बड़ा।

ब्रह्मा= सब जगत को बनाने वाला।

शिव= कल्याणस्वरूप और कल्याण करने वाला।

विष्णु= चर और अचर सब जगत में व्यापक।

रुद्र= दुष्ट कर्म करने वालों को दण्ड देकर रुलाने वाला।

गनेश= सबका स्वामी और पालन करने वाला।

पिता= सबकी पालना और रक्षा करने वाला।

देव= विद्वान, और विद्या आदि देने वाला।

यम= सब प्राणियों को न्यायपूर्वक यथायोग्य कर्मफल देने वाला।

भगवान्= ऐश्वर्यवान्

चन्द्र= आनन्द स्वरूप और सबको आनन्द देने वाला।

ओ3म्= यह शब्द तीन अक्षरों अ, उ, म् से बना है। अ+उ= ओ। ओ और म् के बीच में लिखा '3' ओम् के उच्चारण को लम्बा करने का निर्देश देता है।

अ= विराट्, अग्नि, विश्व आदि।

उ= हिरण्यगर्भ, वायु, तैजस आदि।

म्= ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञ आदि।

विराट्= जो बहुत प्रकार के जगत को प्रकाशित करे।

अग्नि= ज्ञानस्वरूप सर्वज्ञ।

विश्व= जो आकाश, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु में प्रविष्ट हुआ है।

हिरण्यगर्भ= जो सूर्य आदि तेज वाले पदार्थ का उत्पत्ति तथा निवास स्थान है।

वायु= जो सब चराचर जगत् का धारण, जीवन और प्रलय करता है।

तैजस= जो स्वयं प्रकाश स्वरूप तथा सूर्य आदि तेजस्वी लोकों का प्रकाश करने वाला है।

ईश्वर= सामर्थ्यवान्।

आदित्य= जिसका विनाश कभी न हो।

प्राज्ञ= जो सब चराचर जगत् के व्यवहार को यथावत् जानता है।

ईश्वर के सब नामों में 'ओम्' सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इससे उसके सबसे अधिक गुण प्रकट होते हैं। यही ईश्वर का प्रधान और निज नाम है। अन्य सभी नाम गौण हैं।

'ओ3म् खं ब्रह्म' (यजुर्वेद 40,17)

अर्थ– आकाश के समान व्यापक, सबसे बड़ा, सब जगत् का रक्षक ओ3म् है।

'ओ3म् क्रतोस्मर' (यजुर्वेद)

अर्थ– ऐ कर्मशील मनुष्य! ओ3म् को याद रख।

'ओम् इति एतद् अक्षरम् उद्गीधम् उपासीत:।' (छान्दोग्योपनिषद्)

अर्थ– ओम् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता, उसी की उपासना करनी योग्य है, और किसी की नहीं।

'ओम् इति एतद् अक्षरम् इदम् सर्व तस्य उपव्याख्यानम्।' (माण्डूक्योपनिषद्)

अर्थ– वेदादि सब शास्त्रों में परमेश्वर का प्रधान और निज नाम 'ओम्' को कहा गया है।

'सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद् वदन्ति।' यदिच्छनो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रहीमि ओम् इति एतत्।। (कठोपनिषद्)

अर्थ– सारे वेद जिस पद का वर्णन करते हैं, जिसे जानने के लिए सब तप किये जाते हैं, जिसकी चाहना में यति लोग ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, वह पद संक्षेप में तुझे बताता हूं, वह पद 'ओम्' है।

इन मंत्रों से स्पष्ट होता है कि ईश्वर का मुख्य और निज नाम 'ओ3म्' है अन्य नामों को छोड़कर 'ओ3म्' की ही उपासना करनी चाहिए।

–गोविन्दराम आर्य एण्ड संस
१८०, महात्मा गांधी रोड
(दोतल्ला)
कोलकाता–७००००७
९८३०१३५७९४

साहित्य समीक्षा

संग्रहणीय व पठनीय हैं कवि वीरेन्द्र राजपूत कृत अथर्ववेद सहित चारों वेदों के काव्यार्थ

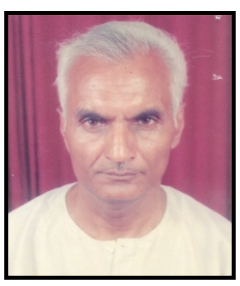

वेदों के काव्यार्थ प्रणेता कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत

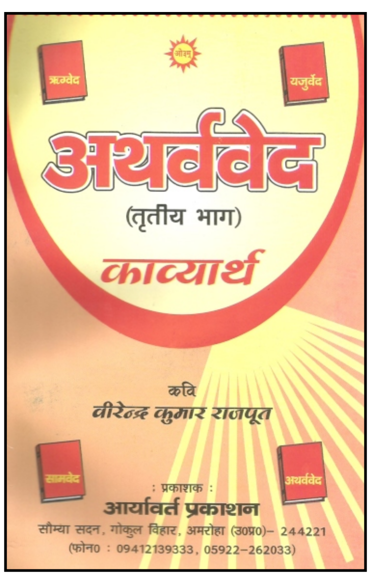

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित कविवर वीरेन्द्र कुमार राजपूत, देहरादून कृत 'अथर्ववेद काव्यार्थ' में कवि ने बड़े ही सरल, सुबोध व सरस कवित्तों व छन्दों द्वारा वेदमंत्रों की काव्यमय व्याख्या की है। उन्होंने यजुर्वेद व सामवेद के बाद अथर्ववेद के काव्यार्थ को चार भागों में विभक्त किया है। उनका यह प्रयास वास्तव में अद्भुत है।

कवि श्री राजपूत ने आर्यसमाज के नियम–3 को आत्मसात करते हुए कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है तथा वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है', चारों वेदों के काव्यार्थ का महान संकल्प लिया है जो अत्यन्त श्रम, समय व व्ययसाध्य है।

सभी आर्यों का कर्तव्य है कि वे उक्त पावन कार्य के लिए श्री राजपूत जी को तन–मन–धन से सहयोग प्रदान करें। आर्य समाजों तथा आर्य महानुभावों को आगे बढ़कर इन काव्यार्थों के प्रचार–प्रसार के लिए बीड़ा उठाना चाहिए। इस समय कवि श्री वीरेन्द्र राजपूत जी बड़ी एकाग्रता तथा मनोयोग से ऋग्वेद के काव्यार्थ की साधना कर रहे हैं। उनकी केवल एक ही धुन है कि शीघ्र से शीघ्र से चारों वेदों के काव्यार्थ का यह गुरुतर कार्य पूर्ण हो। अथर्ववेद के अन्तिम तीन व चौथे भाग के काव्यार्थ आर्यावर्त प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किये गये हैं तथा ऋग्वेद काव्यार्थ के प्रकाशन का कार्य प्रगति पर है। प्रकाशित तीनों वेदों के काव्यार्थ आधे से भी कम मूल्य पर बिक्री हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा (मोबा. : 9412139333) में उपलब्ध हैं।

कैसे बनेगी हिन्दी संयुक्त राष्ट्र की भाषा?

हिन्दी की साइट पर राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान भी नहीं है राष्ट्रभाषा में

डॉ० बीना रुस्तगी

भारत सरकार भले ही राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास के नाम पर बड़े–बड़े दावे करती न थकती हो, लेकिन वह अंग्रेजी का मोह नहीं छोड़ पा रही है। हिन्दी की इससे बड़ी और अपेक्षा क्या होगी कि देश की अधिकारिक साइट अपने ही राष्ट्रीय इतिहास, राष्ट्रीय प्रतीकों, राष्ट्रीय स्मारकों से संबन्धित जानकारी को हिंदी में उपलब्ध नहीं करवा पा रही। इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि राष्ट्रगान व राष्ट्रगीत तक हिन्दी में न देकर रोमन में दिये गये हैं। सरकार की राष्ट्रीय पोर्टल india.gov.in हिन्दी पर यदि आप भारत के बारे में कुछ जानना चाहते हैं तो शायद आपको यह जानकर घोर निराशा होगी कि हिंदी के नाम की इस साइट पर अधिकांश जानकारियां अंग्रेजी में दी गयी हैं। भारतीय संविधान राष्ट्रीय स्मारक ताजमहल हो या भारत का प्राचीन इतिहास, इनके संबन्ध में विस्तृत जानकारी अंग्रेजी में ही दी गयी है। 15 अगस्त, 26 जनवरी, 2 अक्टूबर जैसे राष्ट्रीय दिवस की जानकारी भी आपको हिन्दी में देखने को नहीं मिलेगी। देश की आधिकारिक इस पोर्टल पर राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गीत, राष्ट्रीय गान, पक्षी, प्रतीक, पंचांग, पुष्प, पशु, राष्ट्रपति भवन, शास्त्रीय नृत्य, त्योहार व भारत की जीवनशैली हो या भारत का प्राचीन, मध्यकालीन इतिहास, लालकिले से संबन्धित जानकारी भी अंग्रेजी में ही दी गयी है। इस साइट पर राष्ट्रीय गान व राष्ट्रीय गीत के लिए रोमन का प्रयोग किया गया है। राष्ट्रभाषा प्रेमियों ने इस बाबत इतना ही कहा कि सरकार की नीति तो वही जाने, लेकिन यदि साइट हिन्दी के लिए बनायी गयी है, तो समस्त जानकारियां हिन्दी में ही होनी चाहिए। इनका कहना है कि देश में आज भ्झी ढेरों ऐसे लोग हैं, जिन्हें ठीक से अंगेजी नहीं आती और वे अपने देश को जानने के लिए सरकार की यह पोर्टल खोलता है, लेकिन सब कुछ अंग्रेजी में देखकर इसे बन्द करने में ही अपनी भलाई समझता है। साइट पर स्पष्ट है कि इसे अपडेट करने की जिम्मेदारी राष्ट्रीय सूचना केन्द्र की है और वह सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत है।

मानव का दूसरा शत्रु है अन्याय

'सरस्वती सुमन' के सम्पादक व 'क्रान्ति' जैसी अनेक पुस्तकों के लेखक, तथा छतारी के नवाब डॉ० कुंवर अखलाक के पुत्र वैदिक विद्वान डॉ० आनन्द सुमन सिंह ने मानव के चार प्रमुख शत्रु- अज्ञान, अन्याय, अभाव, तथा आलस्य बताये हैं। गतांक में पहले शत्रु 'अज्ञान' के विषय में उनके विचार प्रस्तुत किये गये थे। इस अंक में मानव के द्वितीय शत्रु 'अन्याय' के विषय में यह आलेख प्रस्तुत है। -सम्पादक

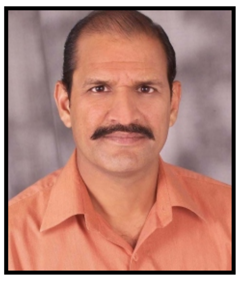

डॉ० आनन्द सुमन सिंह

द्वितीय शत्रु अन्याय :- दूसरा शत्रु अन्याय है। आज प्रतिदिन मानव समाज के सदस्य एक दूसरे को यथाशक्ति अपना शिकार बनाते हैं। जब जिसका मन आया उसने दूसरे पर अत्याचार किया, मानव का रक्षक हों तब उचित लगता है किन्तु रक्षक ही भक्षक बन जाये तब किसे अच्छा लगेगा। आज तो यह नियम बन गया है कि छोटी मछली को बड़ी मछली निगल जाती है उसी प्रकार छोटे व्यापारी को बड़ा व्यापारी समाप्त कर देता है। छोटे शिक्षक का बड़ा शिक्षक उपहास करता है। इसी प्रकार प्रत्येक मानव आज अपने से निर्बल का भक्षक बनता जा रहा है प्रतिदिन यह अन्याय होता है और हम चुपचाप शान्त भाव से यह सब देखते हैं। अन्याय को देखने वाला भी अन्यायी होता है। किन्तु परमेश्वर ने तो एक मनुष्य को प्रत्येक ओर से दूसरे मनुष्य की रक्षा का भार सौंपा गया है। देखें वेदोपदेश-

पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः ।।ऋग्वेद ६-६५-१२

एक मनुष्य प्रत्येक ओर से दूसरे मनुष्य की रक्षा करे। यह उपदेश केवन हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई या फारसी समाज के लिये नहीं अपितु विश्व में बसने वाले इस समस्त मानव परिवार के लिये हैं। जब मानव की रक्षा मानव करेगा, तब विश्व से अन्याय समाप्त हो सकता है। जब अन्याय समाप्त होगा तभी मानवों में शान्ति होगी। तभी मानव किसी ज्ञान कार्य का अध्ययन करेगा। तब ही जीवन सुन्दर बनेगा। परमपिता परमेश्वर ने अन्याय के नाश हेतु वैदिक वर्ण व्यवस्था में क्षत्रिय का चयन किया है। यह क्षत्रिय भी कर्म के आधार पर ही हैं, जन्म के आधार पर नहीं। जो क्षत्रिय धर्म का पालन करता हो अर्थात सकल समाज की रक्षा करने का दायित्व अपने पर ले, वही तो क्षत्रिय है। क्या आज का क्षत्रिय कहलाने वाला मानव वास्तव में क्षात्र धर्म पालन करता है। कहीं वही क्षत्रिय भक्षक तो नहीं बन गया, यह चिन्तन हम सबको करना है। क्या वह क्षत्रिय है जो मदिरा पान करे, क्या वह क्षत्रिय है जो समाज की माताओं-बहनों को बुरी व गन्दी नजर से देखें, नहीं वह क्षत्रिय नहीं हो सकता। सीमा पर बैठा सैनिक जो पवित्र धरती माता के निमित अपना जीवन अर्पण कर रक्षा का दायित्व लिये दुश्मन की प्रतीक्षा में है वह क्षत्रिय हो सकता है। अपनी माताओं बहनों से गुण्डों द्वारा किये जा रहे बलात्कार का सामना करने वाला भाई क्षत्रिय हो सकता है, निर्बल वर्ग को परेशान करने वाले का विरोध करने वाला क्षत्रिय हो सकता है। आज हमें अनेकों प्रकार से अन्याय का शिकार बनाया जा रहा है। देश के ही कुछ आराजकतत्व जो देश का विभाजन करना चाहते हैं, हमें उनका भी जमकर विरोध करना है जो देश में अव्यवस्था फैला रहे हैं। जो साम्प्रदायिकता का विष मानव जीवन में घोल रहे हैं, उनका विरोध भी हमें ही करना है क्योंकि सब परमेश्वर के पुत्र स्वयं में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र हैं वेदोपदेश के अनुसार

ब्रह्मणोऽस्य मुख्यमासीद बाहु राजन्यः कुतः।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पदम्प्रास शूद्रो अजायता । युज ३१-११

भाव-मुख्य ब्राह्मण हैं भुजायें क्षत्रिय उदर वैश्य है, और पैर शूद्र हैं। हमारा शीश ब्राह्मण है जो ज्ञान की सोचता है हमारी भुजायें क्षत्रिय हैं जो रक्षा करती हैं हमारा उदर वैश्य है जो व्यापार कर शरीर को रक्तादि देता है। हमारे चरण शूद्र हैं जो जीवन को गति प्रदान करते हैं।

वैदिक वर्ण व्यवस्था जहाँ हमारे शरीर के लिये उत्तम है, वही समाज रूपी शरीर के लिये अति उत्तम हैं आज एक न्यायाधीश धन के बल पर अन्यायी अत्याचारी का पक्ष ले सकता है। आज का सैनिक अपनी धरती माता के शरीर को विदेशियों के हाथ बेच सकता है। यह सब अन्याय नहीं तब और क्या है? इस अन्याय को अपने मानव समाज से मूल नष्ट करना होगा, अन्याय समाज का चिन्तन शून्य हो जायेगा तब वैदिक संस्कृति का रक्षक कौन होगा। परमपिता परमेश्वर जिसको जाने अनजाने प्रत्येक मत मजहब व सम्प्रदाय ने स्वीकारा है। वह तो हमें उपदेश देता है कि तुम मानवों की ही नहीं अपितु प्राणियों की ओर से भी असावधान मत रहो।

मा जीवेभ्यः प्रमदः।। अथर्व. ८-१-६

भाव-प्राणियों की ओर से असावधान मत रहो अर्थात सचेत रहो। यह वाक्य क्षत्रियों को सम्बोधित करके कहे गये हैं कि हे क्षत्रिय तुम प्राणियों पर हो रहे अत्याचारों की ओर से उदासीन मत रहो-सदा सचेत रहो रक्षक होने के नाते तुम्हारा परम् कर्तव्य है कि सदा प्राणियों की रक्षा में ही अपना समय लगाओ। मानवों पर जो अत्याचार दानव कर रहे हैं तुम उन दानवों को समाप्त करने में हिच-किचाओं मत। सदा आगे रहो अन्याय का विरोध करना आवश्यक है अन्यथा बुजदिल कायर कहलाओंगे वीर होता है, कायर नहीं।

उठो जागे और समाज के श्रेष्ठ मानवों से सनातन संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर कर्तव्य पथ की ओर बढ़ो व अन्य मानवों को भी अपने ज्ञान का उपदेश दो। वेदोपदेश क्षत्रियों को-

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः ।। यजुर्वेद

हम सावधान रहकर राष्ट्र के नेता बन राष्ट्र के जन-जन को जगाने एवं राष्ट्र में ज्ञान व न्याय की ज्योति को जलायें।

आज हमारे क्षत्रिय को जागृत होकर सकल मानव समाज अन्यायरूपी राक्षस को समाप्त करना है, बाहुबल परीक्षण का समय आया है। तब क्षत्रिय जागृत हों व मानव समाज पर हो रहे अत्याचारों को बन्द करें व मानव समाज की ही नहीं प्राणी मात्र की रक्षा प्रत्येक ओर से करें। यही तो कर्म है क्षत्रिय का, आज सकल विश्व का मानव चीत्कार कर रहा है उसे कोई न्याय देने वाला नहीं। क्योंकि प्रमुख न्यायकारी अर्थात परमात्मा को तो हम जानते ही नहीं तब हमें कौन न्याय देगा। अपने द्वारा किये गए पापों का स्मरण कर मानव रोता है। अज्ञान व अन्याय की अग्नि में जलता हुआ मानव कहीं दानव रूप धारण न कर ले। उससे पूर्व ही हे क्षत्रिय जागों तुम महाराणा प्रताप व छात्रपति शिवाजी के वंशज हो। जिन्होंने अत्याचारी अन्यायी अकबर व औरंगजेब से जीवन भर टक्कर ली। तब क्या आज के अन्यायी से तुम डर जाओगे, वंश परम्परा को कर्म के आधार पर जीवित रखने का, कार्य क्षत्रिय तुम्हें करना है। स्मरण करो महाभारत के कुरूक्षेत्र में अर्जुन ने कहा-हे योगीराज मैं किस पर तीर चजाऊँ, कैसे गाण्डीव उठाऊँ, यह सभी तो मेरे गुरूजन, चाचा, मामा, भाई हैं। तब योगीराज कृष्ण ने अर्जुन को जो पवित्र उपदेश दिया क्या वह उपदेश हमें स्मरण हैं?

परित्राणाय साधुनाम विनाशायच दुष्कृताम।। (गीता)

हे अर्जुन-अन्यायी भाई हो, चाचा हो, या गुरू किन्तु यदि वह अन्याय का पक्ष लेता है, न्याय का नाश करता है तब उसका नाश करने में कभी पीछे मत हटो। यही छात्र धर्म है अर्थात जो सज्जन हैं उनका मान-सम्मान करो जो दुष्ट है उनका विनाश करने में मत घबराओ तभी तो धर्म पालन होगा। तब हे क्षत्रिय आज अन्याय के विरुद्ध गाण्डीव उठाओं प्रमाद त्यागो बहुत हो गया सहते-सहते अब अन्याय को सहन मत करो यही युगधर्म है एक बार किसी ने महात्मा गांधी से प्रश्न किया कि यदि कोई गऊ माता को काट रहा हो तो क्या किया जाये। महात्मा गांधी ने उत्तर दिया कि गऊ माता के स्थान पर अपना शीश रख दो और यह प्रक्रिया तब तक चलने दो जब तक कसाई के मन में दया न आ जाये और वह गऊ माता को गऊ प्रेमी अपनी गर्दन को कटवाता रहे। उस समय परम् पूज्य माननीय श्री बलगंगाधर तिलक जी ने कहा था कि गांधी जी के कार्यकर्तापूर्ण अहिंसावादी निर्णय से तो सभी गऊ प्रेमी समाप्त हो जायेंगे फिर कोई गऊ माता का नाम भी लेना पसन्द करने से न माने तुम उसी को गर्दन काट दो न अन्याय रहेगा न अन्यायी, निर्णय आपको करना है कि आप गांधी जी की तथाकथित अंहिसा को स्वीकर करना चाहते हैं, या माननीय तिलक के ओजस्वी न्यायकारी वक्तव्य को, आज यदि हम एक के बाद एक गर्दन के अन्यायी, अत्याचारी के सम्मुख रखते रहें तब क्या न्याय बचेगा? तब को संसार में अन्याय का साम्राज्य ही होगा। इससे सुन्दर यह है कि हम उस अन्यायी को ही समाप्त कर दें जिससे अन्याय रूपी कोई दुष्कर्म धरा पर न बचे। आज हमारा क्षत्रिय महात्मा गांधी की नीति को अपना रहा है। भोगविलास एवं धन के नशे में चूर क्षत्रिय को प्रमाद को त्याग कर क्षत्रिय कर्म क्षेत्र में उतर कर प्रत्येक अन्यायी विरोध करना है। वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों में-

प्रत्येक के साथ प्रीतिपूर्वक, यथायोग्य कर्मानुसार बर्तना चाहिये। कायरता का सिद्धान्त नहीं कि कोई एक गाल पर थप्पड़ मारे और तुम दूसरा गाल भी बढ़ा दो। क्षत्रिय का कर्म है कि यदि हाथ बढ़े तब ही उसको काट दे। तब तो अन्याय समाप्त होगा यदि अन्याय समाप्त होगा तभी विश्व में शान्ति होगी। तब हे क्षत्रिय आओ मोह त्यागो अन्यथा का नाश करो व विश्व में चक्रवर्ती सार्वभौम वैदिक साम्राज्य की स्थापना करो ऋग्वेद की पवित्र वाणी द्वारा हम अपने समाज से व सकल विश्व से अज्ञान का नाश कर ज्ञान का प्रकाश करने में समर्थ है, यजुर्वेद की पवित्र वाणी द्वारा हम अन्याय का नाश कर न्याय की स्थापना करने में सक्षम है तब आयें पवित्र वेदवाणी के मार्ग दर्शन से अपना समाज व सकल विश्व का जीवन सार्थक सुखी व शान्तिमय बनाये।

(क्रमशः)

महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा (गुजरात) में

बोधोत्सव का भव्य आयोजन

आर्यजनों को जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में भी महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन रविवार, से मंगलवार अर्थात् 3 से 5 मार्च 2019 तक किया जाएगा। आपसे निवेदन है कि आप इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी। **-रामनाथ सहगल, मंत्री**

आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य की स्मृति में स्मारिका-प्रकाशन

आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य-जगत की एक प्रख्यात विभूति थे। वे जीवनपर्यन्त 'वानप्रस्थ साधक आश्रम' के विभिन्न प्रकल्पों के लिए समर्पित रहे। उनके विस्तृत कार्यों ने देश-विदेश को प्रभावित किया है। उनकी कार्यशैली, मार्गदर्शन, योजनाएं दीर्घावधि तक सहस्रों व्यक्तियों को प्रेरित करती रहेंगी। हम सभी व्यक्तियों की स्मृतियां उनके पावन संस्मरण से आप्लावित हैं। हमारी इच्छा है कि आचार्य ज्ञानेश्वर जी से संबन्धित अविस्मरणयी प्रेरक संस्मरणों को स्मारिका के रूप में प्रकाशित किया जाए। इस संदर्भ में आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप अपने संस्मरण को लेखबद्ध करके और यदि उनका कोई विशेष चित्र हो, तो वह भी कृपया हमें यथाशीघ्र प्रेषित करें, ताकि वानप्रस्थ आश्रम की इस अभिलाषा में आपका पुनीत सहयोग प्राप्त हो सके। आप अपने लेख और विशेष चित्र को ई-मेल अथवा पत्र-व्यवहार के माध्यम से प्रेषित कर सकते हैं।

पत्र व्यवहार का पता :
वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड, पत्रा0- सागपुर,
जिला- साबरकांठा (गुजरात)- 383307
E-mail id- vaanaprastharojad@gmail.com

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है।
-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा
मोबा. : 9412139333

आगामी कार्यक्रम

18 से 26 अक्टूबर 2018	: दान्दूपुर, मेरठ में चतुर्वेद पारायण यज्ञ
20 से 23 अक्टूबर 2018	: दादरी (गौतमबुद्धनगर)
28 से 30 अक्टूबर 2018	: ग्राम नगला महेश्वरी (बिजनौर)
26 से 28 अक्टूबर 2018	: क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन चरथावल, मुजफ्फरनगर
29 अक्टूबर से 4 नवम्बर 2018	: योग महाविद्यालय, सुन्दरपुर, रोहतक में क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर एवं तृतीय वार्षिकोत्सव
8 नवम्बर 2018	: भव्य संगीत संध्या, दिल्ली हाट प्रीतमपुरा, नई दिल्ली, आयोजक- केन्द्रीय आर्य युवा परिषद (अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष 9810117464)
8 से 9 नवम्बर 2018	: डोगरा अहीर, जि0 महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)
10 से 11 नवम्बर 2018	: देवनगर, जि0 महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)
12 से 18 नवम्बर 2018	: आर्यसमाज अर्जुनपुर, गुड़गांव
11 से 18 नवम्बर 2018	: आर्य वीरांगना शिविर, आर्य समाज, वाशी, मुम्बई (सुवृति शास्त्री, 9029421718)
25 नवम्बर 2018	: आर्य समाज इन्दिरापुरम्, गाजियाबाद (प्रधान वियज आर्य)
8 नवम्बर 2018	: भव्य संगीत संध्या, दिल्ली हाट, प्रीतमपुरा, नई दिल्ली, समय 4 से 8 बजे रात्रि (अनिल आर्य)
18 नवम्बर 2018	: आर्य नगर, गाजियाबाद
19 से 25 नवम्बर 2018	: मुलुण्ड आर्यसमाज, मुम्बई।
23 से 25 नवम्बर 2018	: आर्य समाज, बहराइच, उ0प्र0
26 से 29 नवम्बर 2018	: आर्य समाज, नगीना (बिजनौर)
30 नवम्बर से 2 दिसम्बर 2018	: आर्य समाज अफजलगढ़, बिजनौर
3 से 5 दिसम्बर 2018	: आर्य समाज, सैदपुर (मतलबपुर), मुरादाबाद
7 से 9 दिसम्बर 2018	: आर्यसमाज, बड़ा बाजार, सोनीपत (हरियाणा)
22 से 23 दिसम्बर 2018	: आर्य समाज, राजा मण्डी, आगरा
3 से 6 जनवरी 2019	: आर्य समाज, रायपुर (छत्तीसगढ़)

संक्षिप्त समाचार

■ परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्वावधान में 135वां ऋषि बलिदान समारोह एवं ऋषिमेला 16 से 18 नवम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। सम्पर्क सूत्र है- 0145-2460164

■ राष्ट्रधर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद-यज्ञ-योग साधना केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ का 52वां स्थापना दिवस पर ऋग्वेद वृहद् यज्ञ एवं नि:शुल्क ध्यान योग शिविर का आयोजन 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में किया जा रहा है।

■ 17, 18 नवम्बर 2018 को ओम् साधना मण्डल करनाल में वेद-मनीषी स्वामी विद्यानन्द विदेह के पावन जन्ममदिवस पर यज्ञ-सत्संग का आयोजन किया जाएगां सभी आमंत्रित हैं।

■ आर्य समाज रेवाड़ी का वार्षिकोत्सव 13 से 14 अक्टूबर 2018 तक होगा।

■ आर्य समाज, फरीदाबाद, सैक्टर 28-31 का वार्षिकोत्सव 11 से 14 अक्टूबर तक मनाया गया।

■ आर्य समाज करियावैन (बदायूं) का वार्षिकोत्सव 15 से 17 अक्टूबर तक मनाया गया, जिसमें आचार्य स्वदेश संजीव रूप, अलका आर्या, स्वामी कृष्ण मुनि ने प्रवचनों एवं भजनोपदेश दिये।

चरक, सुश्रुत आदि के अनुभवों से उठाएं लाभ

जयभगवान आर्य
कलोई (झज्जर) हरियाणा।

स्वामी शक्तिवेश के जन्मदिवस पर आर्य समाज मन्दिर कलोई में यज्ञ, भजन, प्रवचन, अभिनन्दन समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य वक्ता योगाचार्य योगेन्द्र वैदिक आश्रम रेवाड़ी, स्वामी सच्चिदानन्द जी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर, योगाचार्य सत्यवीर प्रेरक, गुरुकुल झज्जर के मंत्री राजवीर आर्य तथा पं0 रामकरण ने कहा कि हमें महर्शि चरक सुश्रुत आदि ऋषियों के अनुभवों से लाभ उठाकर स्वस्थ बनना चाहिए। इस अवसर पर स्वस्थ्य रहने के अनेक नुस्खे भी बताए गए।

अभिनन्दन समारोह में उपस्थित विशिष्टजन -केसरी

स्वामी धर्ममुनि जी ने कलोई आर्य समाज मन्दिर में एक विशाल हाल की आवश्यकता बताई जिसे ग्रामवासियों ने स्वीकार किया। अन्त में ओमप्रकाश यादव ने सभी को धन्यवाद दिया।

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज, कलकत्ता

प्रधान- मनीराम आर्य
उपप्रधान- सत्यप्रकाश जायसवाल, ध्रुवचन्द जायसवाल, दीपक आर्य
मंत्री- मदनलाल सेठ
उपमंत्री- शिवकुमार सायसवाल, आनन्द प्रकाश गुप्त, विवेक जायसवाल
कोषाध्यक्ष- कृष्ण कुमार जायसवाल
हिसाब परीक्षक- विनय कुमार आर्य
पुस्तकाध्यक्ष- सुरेश अग्रवाल
सहपुस्तकाध्यक्ष- सुषमा गोयल, सत्येन्द्र जायसवाल

आर्य समाज मंदिर, मस्जिद मोठ, नई दिल्ली

प्रधान- चतरसिंह नागर
मंत्री- ओमप्रकाश सैनी
उपमंत्री- विरेन्द्र सिंह
कोषाध्यक्ष- देवेन्द्र कुमार

आर्य समाज, सैक्टर-२२, चण्डीगढ़

संरक्षक- अवनीश चौहान, अशोक पाल जग्गा
प्रधान- बनी सिंह
उपप्रधान- सोमदत्त शास्त्री, सुरेन्द्र सिंह
मंत्री- प्रेमचन्द गुप्ता
उपमंत्री- शिवनारायण कौशिक, नीरज कौड़ा
कोषाध्यक्ष- अनिल वालिया
पुस्तकाध्यक्ष- महेश कुमार आर्य

भव्यता से मनाया वार्षिकोत्सव

रोहतक (हरियाणा)। आर्य समाज रूपनगर, रोहतक का वार्षिकोत्सव 19 से 23 सितम्बर तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। महोत्सव में आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान आचार्य ओमव्रत जी (बुलन्दशहर), युवा भजनोपदेशक अजय आर्य (मेरठ) ने अपने प्रेरक प्रवचनों एवं भजनों से ज्ञानामृत की वर्षा की। इस अवसर पर जीवन भर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने वाले वयोवृद्ध वैदिक विद्वान पं0 रमेशचन्द्र 'निश्चिन्त' (सहारनपुर) को आर्यावर्त समाज द्वारा सम्मानित भी किया गया।

आर्यावर्त परिसर, अमरोहा में स्थित है

हेमा-नन्द आर्य गऊशाला

आर्यावर्त परिसर, अमरोहा में जहां आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त प्रकाशन तथा आर्यावर्त मुद्रणालय स्थित हैं वहीं सन् 2009 में हेमा-नन्द आर्य गौशाला की स्थापना की गयी है। गऊ संरक्षण, गौपालन तथा गऊ संवर्द्धन की दृष्टि से स्थापित यह गौशाला नगर में खास प्रतिष्ठा रखती है। अमरोहा में जे.एस. हिन्दू डिग्री कॉलेज में हिन्दी विभाग की अध्यक्षा डॉ. बीना आर्या की माता जी स्व. श्रीमती हेमापन्त तथा डॉ. अशोक कुमार आर्य के पिता जी स्व. नन्दराम रुस्तगी, दो गऊ प्रेमियों की पुण्य स्मृति में यह गौशाला स्थापित की गयी है।

इस गौशाला का विधिवत शुभारम्भ आर्यजगत के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती 'वेदभिक्षु' के द्वारा सम्पन्न यज्ञ के साथ हुआ। इस गौशाला में गौवंश की सेवा और उसका संवर्द्धन बड़े ही सात्विक और श्रद्धाभाव से हो रहा है। इसी परिसर में स्थापित आर्यावर्त प्रिन्टिंग प्रेस की ऑफसैट यूनिट पर निरन्तर उच्चकोटि का आर्ष साहित्य छप रहा है तथा यहीं से आर्यावर्त केसरी का भी प्रकाशन हो रहा है।

इस गौशाला की स्थापना के पीछे आर्यावर्त केसरी के प्रधान सम्पादक डॉ. अशोक कुमार आर्य की माता जी श्रीमती शकुन्तला देवी, पत्नी श्रीमती बीना आर्या एवं उनके पिता श्री रमेश चन्द जी पन्त की विशेष प्रेरणा रही है। सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा में स्थित इस गौशाला की गऊओं के लिए हरे चारे की विशेष व्यवस्था हेतु कृषि भूमि भी क्रय की गयी है।

भारतीय संस्कृति में गऊ का विशेष स्थान है। भारत में प्राचीन काल से ही गोपालन आर्थिक, सामाजिक एवं शारीरिक उन्नति का प्रमुख आधार रहा है। महर्षि दयनन्द सरस्वती ने गौकरुणानिधि में गौ का महत्व बताया है। गोवंश की वृद्धि, उनकी नस्ल सुधार और गायों की रक्षा केवल नारे लगाने अथवा गायों की फोटो की पूजा करने से नहीं होगी, अपितु गऊभक्त श्रद्धालुजनों को गऊ पालन व संरक्षण के लिए आगे आना होगा और गौपालकों को भी सहयोग देना और प्रोत्साहन देना होगा।

हमारी गौशालाएं

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गऊ संवर्द्धन तथा संरक्षण के लिए सर्व प्रथम सन् 1879 में हरियाणा के रामपुरा, रेवाड़ी में गौशाला का स्थापना की। यह विश्व की पहली गौशाला है। हमारे यहां 'गावो विश्वस्य मातर:' कहते हुए गाय को सबकी माता की संज्ञा से विभूषित किया गया है। इस **'हमारी गौशालाएं'** स्तम्भ के अन्तर्गत आर्यावर्त केसरी द्वारा भारतवर्षीय गौशालाओं के विषय में परिचयात्मक सामग्री प्रकाशित की जा रही है। तद्नुसार विज्ञजनों की ओर से सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित है। धन्यवाद, **-सम्पादक**

वैदिक शिक्षक दम्पत्ति ने हिन्दी का बढ़ाया गौरव

आईआईटी द्वारा रूबी व यतीन्द्र सम्मानित

राजकुमार पंवार
माजरा सहासपुर (अमरोहा)।

आर्यावर्त केसरी के समाचार सम्पादक उदीयमान लेखक तथा शैक्षिक, पर्यावरण, व समाजिक क्षेत्र में विभिन्न राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय मंचों से अलंकृत डॉ0 यतीन्द्र विद्यालंकार को जिला प्रशासन ने सर्वोत्कृष्ट हिन्दी शिक्षक सम्मान से अलंकृत किया है। वहीं उनकी पत्नी डॉ0 रूबी सिंह कटारिया को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), रुड़की द्वारा सर्वोत्तम हिन्दी लेखन का सम्मान प्राप्त हुआ है।

प्राप्त विवरण के अनुसार गत 5 दिसम्बर को राष्ट्रीय हिन्दी शिक्षक सम्मान से विभूषित डॉ0 यतीन्द्र विद्यालंकार का सात अक्टूबर को नगर के शिवानी मंडप में जिलाधिकारी द्वारा गठित चयन समिति के निर्णय के अनुसार धनौरा विकासखण्ड के पूर्वमाध्यमिक विद्यालय के सहायक अध्यापक डॉ0 यतीन्द्र कुमार विद्यालंकार को समारोहपूर्वक जनपद के सर्वोत्कृष्ट शिक्षक के सम्मान से अलंकृत किया गया।

दूसरी ओर डॉ0 यतीन्द्र विद्यालंकार की धर्मपत्नी व जनपद के विकास धनौरा में प्रधानाचार्य डॉ0 रूबी सिंह को गत 28 सितम्बर को आईआईटी रूड़की के जगदीश चन्द्र बोस सभागार में दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति सुधीश पचौरी ने सर्वोत्तम हिन्दी लेखक का सम्मान दिया। ज्ञात हो कि यतीन्द्र विद्यालंकार भारत सरकार की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य भी हैं तथा वे जनपद के प्रसिद्ध आर्यसमाजी महाशय भारत सिंह आर्य (ग्राम मुहिदुद्दीनपुर) के सुपौत्र हैं तथा आर्यावर्त केसरी के समाचार सम्पादक भी हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय व गुरुकुल, टंकारा में

उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न

टंकारा (राजकोट)। टंकारा स्थित उपदेशक महाविद्यालय में इस वर्ष के नव सत्र में प्रविष्ट हुए नये ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार मुख्य यज्ञशाला में गुरुकुल के आचार्य रामदेव के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें भारत के 11 प्रान्तों एवं नेपाल से आये इन ब्रह्मचारियों ने वैदिक संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए संकल्प लिया। इस अवसर पर स्थानीय ट्रस्टी हंसमुख परमार, कार्यालय संचालक रमेश मेहता, टंकारा ग्राम के पंचायत प्रमुख एवं महाविद्यालय के अध्यापकगण उपस्थित थे।

वेदारम्भ संस्कार में जब छात्रों ने उद्घोष किया ''जीवपुत्रा मम आचार्य:'' अर्थात् मेरा आचार्य जीवित पुत्र हो, इस कथन से दिशाएं भी स्तब्ध हो गयीं प्रतीत हो रही थी। जब इस तरह के छात्र आर्ष गुरुकुलों से निकल कर वैदिक संस्कृति के अनुसार अपने जीवन को बढ़ाते हुए आगे बढ़ेंगें, तो निश्चित ही वैदिक संस्कृति का संरक्षण ही नहीं होगा, अपितु वेद के प्रशंसित जीवन को जीने वाले नागरिक भी होंगे।

उल्लेखनीय है कि टंकारा स्थित इस महाविद्यालय में जहां महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से संबन्धित परीक्षाओं में प्रविष्ट छात्र, ब्रह्मचारी तैयार किये जाते हैं। वहीं बाल्यकाल से ही वेदप्रचार एवं कर्मकाण्ड के लिए वैदिक विद्वान, पुरोहित आदि का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। अन्त में आचार्यश्री द्वारा आशीर्वचन देते हुए नये प्रविष्ट ब्रह्मचारियों को कहा कि अपने जीवन में स्वाध्याय, सहनशीलता एवं सेवा तीन बातों का अवश्य ध्यान रखें। आर्ष गुरुकुल पद्धति में अनुशासन जीवन जीने की जो कला सिखाई जाती है, उसे हमेशा तन्मयता से ग्रहण करें।

ओमकारनाथ को किया नमन

टंकारा (राजकोट)। महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा परिसर में ओंकारनाथ आर्य जी की पुण्यतिथि पर टंकारा स्थित सिलाई केन्द्र की बालिकाओं ने विशेष श्रद्धांजलि यज्ञ का आयोजन किया। इस अवसर पर सिलाई केन्द्र की अध्यापिका श्रीमती हंसा बेन तथा श्रीमती राज लूथरा, सिलाई केन्द्र की संयोजिका दिल्ली से विशेष रूप से उपस्थित हुईं।

कार्यक्रम में टंकारा गुरुकुल के आचार्य रामदेव, कार्यालय संचालक रमेश मेहता तथा सिलाई सीख रहीं बालिकाओं के अभिभावक उपस्थित हुए। सभी ने ओमकारनाथ को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उल्लेखनीय है कि इस सिलाई केन्द्र में टंकारा एवं निकटवर्ती गांव की निर्धन बालिकाओं को नि:शुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है।

पिछले कई वर्षो से संचालित इस प्रशिक्षण केन्द्र से कई बालिकाएं प्रशिक्षण हो आज आर्थिक रूप से सशक्त हुई हैं। यहां बिना किसी जातिभेद के सभी बालिकाओं को प्रशिक्षित दिया जाता है। इस प्रशिक्षण केन्द्र को स्व0 श्री ओंकार की धर्मपत्नी एवं ट्रस्ट की उपप्रधाना श्रीमती शिवराजवती आर्या एवं उनके सुपुत्र सुनील मानकटला द्वारा आर्थिक सहायता दी जाती है।

वैदिक वीरांगना दल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

उदयपुर। अतीत का शोक, वर्तमान का मोह, और भविष्य की चिन्ता ये रात की नींद और दिन का चैन छीन लेती हैं। निराशा को उत्साह में कैसे बदलें व असफलता पर सफलता की मोहर लगाने के व्यावहारिक सूत्र दर्शनों के विशेषज्ञ स्वामी शान्तानन्द ने वैदिक वीरांगना दल के कार्यक्रम में विगत 16 सितम्बर को अग्रसेन भवन, जयपुर में रखे। जिसमें विद्वान स्वामी सम्पूर्णानन्द ने वेदमंत्रों की व्याख्या की।

ब्र० कृष्णदत्त जी का साहित्य उपलब्ध है

पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि पूज्यपाद ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

सम्पर्क :- डॉ. अशोक कुमार आर्य (9412139333)
आर्यावर्त प्रकाशन/आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा-२४४२२१

हार्दिक श्रद्धांजलि

प्रसिद्ध भजनोपदेशक तुलसीराम नहीं रहे

पलवल (हरियाणा)। आर्य जगत के महान समाजसेवी वेद प्रचार मण्डल मौलडबंद, दिल्ली के संस्थापक पं0 तुलसीराम आर्य वेदोपदेशक, ग्रा0 बहीन, जिला पलवल, हरियाणा का विगत 19 अगस्त को निधन हो गया। वे 84 वर्ष के थे। एशियन अस्पताल फरीदाबाद में उनका इलाज चल रहा था। पंडित जी का शांतियज्ञ सुरेश शास्त्री जी ने 24 अगस्त को सम्पन्न कराया। पं0 तुलसीराम आर्य, आर्य जगत के प्रख्यात वैदिक विद्वान, सिद्ध हस्तलेखक, ओजस्वी कवि, कुशल वक्ता, पं0 नन्दलाल निर्भय के बड़े भाई थे। पं0 तुलसीराम की पत्नी वीरवती आर्या लक्ष्मी स्वरूपा हैं। पं0 तुलसीराम अपने पीछे 4 पुत्र तथा एक पुत्री छोड़ गये हैं।

धूमधाम से मना बहजोई आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव

लव कुमार आर्य
बहजोई (सम्भल)।

बहजोई नगरी जो कभी एशिया में अपने नाम की प्रसिद्धि देती थी। जहां आर्य समाज मन्दिर में नित्य यज्ञ, हवन होते हैं, एक बार पुन: आर्य समाज का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव भारतीय संस्कार, संस्कृति, पर्यावरण की शुद्धि, आत्मिक, सामाजिक उन्नति के साथ 19 से 31 सितम्बर तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी दयानन्द विदेह (करनाल), दिनेश कुमार आर्य 'पथिक' (अमृतसर), शिवकुमार शास्त्री (सहारनपुर), सुमनकुमार 'वैदिक' आदि विद्वानों ने अमृतवर्षा की तथा आर्य कन्या गुरुकुल सासनी (हाथरस) की ब्रह्मचारिणियों ने वेदपाठ किया। इस अवसर पर भव्य शोभायात्रा का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में योग, प्राणायाम, यज्ञ, भजन, प्रवचन, महिला सम्मेलन, मातृरक्षा, गोरक्षा सम्मेलन सम्पन्न हुए।

कार्यक्रम में आचार्य स्वदेश (कुलपति गुरुकुल) वृन्दावन, आचार्य शिव कुमार शास्त्री, सहारनपुर, डॉ0 अशोक कुमार आर्य, सम्पादक आर्यावर्त केसरी, डॉ0 बीना आर्या (अमरोहा) ज्ञानेन्द्र गांधी, दयाशंकर आर्य, राजेन्द्र आर्य आदि ने भी अपना मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम में मितिशा रुस्तगी ने महिला सशक्तिकरण पर एक रचना प्रस्तुत की, जिसे सभी ने सराहा। लक्ष्मीनारायण जिला प्रधान, आर्य समाज बहजोई के प्रधान विद्युत कुमार आर्य, मंत्री लव कुमार वार्ष्णेय, कोषाध्यक्ष नरेश चन्द्र आर्य एवं महिला आर्य समाज प्रधाना धमेश्वरी देवी मंत्राणी आशा आर्या तथा कोषाध्यक्ष सुषमा देवी आदि ने सभी का आभार जताया। कार्यक्रम के संयोजक और व्यवस्थापक महेश चन्द्र आर्य तथा रमेश चन्द्र आर्य ने भी सक्रिय भूमिका निभाई।

तीन दिनों तक चले इस उत्सव में जनपद सम्भल, मुरादाबाद, बदायूं आदि सहित नगर व क्षेत्र के श्रद्धालु जनों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। समारोह जनमानस में अपनी अमिट छाप छोड़ गया।

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्ष कन्या गुरुकुल में मनाया पर्व

लुधियाना (पंजाब)। आर्यसमाज मॉडल टाउन, लुधियाना द्वारा संचालित महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा रक्षाबंधन का पर्व स्वामी दयानन्द हाल, शास्त्रीनगर में बड़ी श्रद्धा व धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ द्वारा किया गया। इस समारोह में ब्रह्मचारिणियों के अभिभावकगण भी उपस्थित थे। गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों के मधुर व सम्मोहक भजनों व रक्षाबंधन के गीतों ने सभी को मुत्रमुग्ध कर दिया। छठी कक्षा की ब्रह्मचारिणियों ने आर्य समाज के विषय में अपने विचार व्यक्त किये। शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए योग को अनविार्य मानते हुए ब्रह्मचरिणियों ने सब को विस्मित कर दिया। इस अवसर पर वैदिक प्रवक्ता आचार्य आर्य नरेश ने आशीर्वाद दिया।

सत्यार्थप्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

सत्यार्थप्रकाश के मर्म को समझने-समझाने का दायित्व विद्वानों का है। हमारा प्रयास सत्यार्थप्रकाश के विद्वान तैयार करना है, जो महर्षि दयानन्द के सधर्म रथ को आगे बढ़ा सकें। इसी उद्देश्य से आर्यावर्त केसरी पाक्षिक के सान्निध्य में श्री सुमन कुमार वैदिक के संयोजन में सत्यार्थप्रकाश परीक्षा आयोजित की जा रही है।

परीक्षा में बैठने के लिए आर्यावर्त केसरी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा के पते पर अपना नाम, पता, फोटो, परिचय की छायाप्रति के साथ 150/- रुपये की धनराशि देनी होगी, जिसमें प्रतिभागी को एक सत्यार्थप्रकाश दिया जाएगा या छ: माह की आर्यावर्त केसरी पाक्षिक की सदस्यता दी जाएगी। यदि आप अपना रजिस्ट्रेशन डाक द्वारा कराएंगे, तो उस स्थिति में आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या-30404724002 (IFSC कोड SBIN 0000610) में 200/- रुपये जमा कराने होंगे तथा रसीद की छायाप्रति भेजनी होगी। पंजीकरण दिनांक 01 अक्टूबर से 30 नवम्बर 2018 तक अमरोहा कार्यालय में अथवा ग्रेटर नोएडा स्थित श्री सुमन कुमार वैदिक के निवास अथवा रोहिणी, दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आर्यावर्त केसरी के स्टॉल पर कराये जा सकते हैं।

प्रथम पुरस्कार- एक लाख रुपये तथा स्मृति चिह्न
द्वितीय पुरस्कार- पचास हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
तृतीय पुरस्कार- पच्चीस हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
अनेक नामित पुरस्कार- इसकी संख्या निश्चित नहीं है क्योंकि ये श्रद्धालुओं के परिजनों के नाम से दिये जाएंगे।
पच्चीस पुरस्कार- एक-एक हजार रुपये।

-: कैसे बनेंगे विजेता :-

(1) परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, जिनका उत्तर उत्तरपुस्तिका में लिखना होगा।
(2) किसी भी आयुवर्ग का व्यक्ति परीक्षा दे सकता है।
(3) आर्यावर्त केसरी के 25 सदस्य एक स्थान पर बनाने वाले का पंजीकरण नि:शुल्क होगा एवं आर्यावर्त केसरी की ओर से उसको फोटोयुक्त प्रेस परिचय पत्र दिया जाएगा।
(4) पत्र-व्यवहार में सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा लिफाफे पर अवश्य लिखें। परीक्षा का आयोजन दिनांक- 26 मई 2019 को इन प्रस्तावित केन्द्रों- दिल्ली, अमरोहा, ग्रेटर नोएडा, लखनऊ, नजीबाबाद, बरनावा, सासनी, मेरठ, बनारस, बरेली, गुरुग्राम, महेन्द्रगढ़, झज्जर, हिसार, रोहतक, मुम्बई, बेंगलूरु, कलकत्ता, चेन्नई, होशंगाबाद, हैदराबाद, बोकारो, भोपाल, चण्डीगढ़, रोजड़, कोटा, हरिद्वार, उदयपुर, अहमदाबाद आदि में सम्पन्न होगी। परीक्षा केन्द्रों की संख्या बढ़ाने अथवा घटाने तथा परीक्षा तिथि में परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक मण्डल को होगा।

विशेष :

1- जो भी परीक्षार्थी विजेता घोषित होगा, उसको पुरस्कार प्राप्त करने से पूर्व मंच पर अपनी योग्यता भी सिद्ध करनी होगी। पुरस्कार-मंच पर उससे जनसामान्य के द्वारा सत्यार्थप्रकाश से संबन्धित प्रश्न पूछे जाएंगे।
2- अपने प्रियजनों की स्मृति में उनके नाम से।
3- सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा की निधि हेतु मुक्तहस्त से दान दें, रजिस्ट्रेशन कराने में अक्षम प्रतिभागियों को शुल्क में मद्द दें।
4- आयोजन में हमसे जुड़कर सहयोग करें, तथा अपने शहर में परीक्षा का केन्द्र बनवाएं। धन्यवाद,

सुमन कुमार वैदिक- मुख्य संयोजक
निवास- जे.380, बीटा-।।,
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) मो. 8368508395

डॉ० अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
मो. 9412139333

डॉ० अनिल रायपुरिया- संयोजक
नि. कोट बाजार, अमरोहा
मोबा. : 9837442777

स्वास्थ्य जगत

अमृत फल 'आंवला' फल एक, गुण अनेक

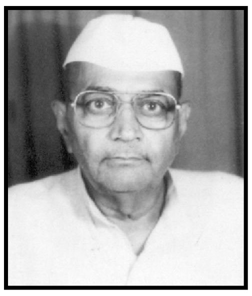

हरिश्चन्द्र आर्य

आयुर्वेदिक मत :
अम्ल प्रधान लवण रहित पांच रस, लघु रुक्ष शीत गुण शीतवीर्य और मधुर विपाक है। यह त्रिदोषहर विशेषकर पित्तशामक है। मेध्य बल्य, रोचक, दीपन, यकृत उत्तेजक हृद कफघ्न, वृष्य, मूत्रल प्रमेहघ्न, कुष्ठग्न, ज्वरघ्न और रसायन है। दाह, पेचिस, सिरशूल, तथा मूत्रावरोध में इसका लेप करते हैं। नेत्ररोगों में इसका स्वरस डालते हैं। खालिश और फालिश में में आंवलों से सिर धोते हैं। आयुर्वेद का च्यवनप्राश इसी से बनता है। किसी भी ऋतु, प्रकृति, देशकाल और वय के लिए आंवला पथ्य है। वीर्यवर्धक, कान्तिवर्धक, त्रिदोषनाशक, उत्तम रसायन है। रक्तपित्तनाशक रक्तशोधक सारक और रुचिकर है।

वैज्ञानिक मत : वैज्ञानिक मत के अनुसार आंवले में विटामिन सी भारी मात्रा में है। नारंगी, संतरे और मुसम्मी की तुलना में आंवले में विटामिन सी लगभग 20 गुना अधिक है। इसके अतिरिक्त लोहतत्व भरपूर है। शरीर में नया रक्त पैदा करता है। इसके फल में गौलिक ऐसिड, टैनिक ऐसिड, शर्करा, अम्ल, ब्यूमिन कैलसियम है। डॉ0 गोरी ने लिखा है कि ताजा फल चिकना, पेशाब साफ लाने वाला और हल्का दस्तावर होता है। सूखा फल शीतल पाचक और उत्तेजक होता है। आंवले में गूदा 90.97 प्रतिशत, तरी 70.5 प्रतिशत, जूस का घुलनशील तत्व 23.8 प्रतिशत, खट्टापन 3.28 प्रतिशत।

प्रयोग : इसके प्रयोग से शरीर की प्रतिरक्षा शक्ति सुरक्षित रहती है। बार-बार होने वाली बीमायिों से बचाव करने वाला, विटामिन सी का सबसे बड़ा भण्डार है। इसका विटामिन सी पकाने, सुखाने, तलने तथा पुराना होने पर भी नष्ट नहीं होता।

आंवला मैटावोलिक क्रियाशीलता को बढ़ाता है। इससे शरीर स्वस्थ, तेजस्वी, शक्तिशाली रहता है। इसके सेवन से हड्डियां पुष्ट होती हैं। जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है। आंवला भोजन को पचाने में सहयोगर करता है। आंवले में बैक्टीरिया से लड़ने की क्षमता होती है। यह रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।

अधिष्ठाता- उपदेश विभाग, अमरोहा, फोन : ०५९२२-२६३४१२

खीर खाओ मलेरिया भगाओ

सुमनकुमार वैदिक

हम सब जानते हैं कि मच्छर के काटने से मलेरिया, चिकनगुनिया, डेंगू होता है। जीवन में लाखों बार तो मच्छर हमें काटते हैं, किंतु मलेरिया चिकनगुनिया, डेंगू आदि रोग तो कभी-कभी होते हैं। अर्थात् यह कहना कि मच्छर के काटने से ही ये रोग होते हैं, एक प्रतिशत सत्य हो सकता है। वैक्टीरिया अपने अनुकूल वातावरण में ही पनप सकते हैं, प्रतिकूल वातावरण में नहीं। जैसे दूध में केवल दही मिलाने से दही नहीं बनता। उसके लिए दूध गर्म होना चाहिए तथा लगभग छ: घंटे तक अनुकूल गर्म वातावरण मिलने पर ही दही जमता है।

मलेरिया, चिकनगुनिया, डेंगू, वायरल के वैक्टीरिया शरीर में तभी परपते हैं, जब पित्त का वातावरण उन्हें चार दिनों तक मिलता है। अन्यथा थोड़े ही समय में वे नष्ट हो जाते हैं। सारे प्रयासों के पश्चात् भी हम नहीं कह सकते कि मच्छर तथा रोगवाहक सूक्ष्म कीट नहीं काटेंगे। यह हमारे नियंत्रण में नहीं है। किंतु पित्त को नियंत्रण करना हमारे हाथ में है। ऐसे पौधे, जो सूर्य की गर्मी से सूखने के बाद, हमें मिलने वाली दाल और अनाज पित्तवर्धक होते हैं। पित्तवर्धक भोजन का अधिक मात्रा में लेने से शरीर में ऐसिडिटी आदि पित्त की वृद्धि होती है। वर्षा ऋतु के पश्चात् शरद ऋतु आती है। आकाश में बादल, धूल न होने के कारण कड़क धूप निकलती है, जिससे शरीर में पित्त कुपित होता है। वर्षा में गड्ढों में जमा पानी के कारण बहुत अधिक मच्छर पैदा होते हैं। इससे मलेरिया, चिकनगुनिया, डेंगू का अधिक होता है। खीर पित्त का शमन करती है। शरद ऋतु में पितृपक्ष (श्राद्ध) आता है। इसमें खीर बनाई जाती है। किंतु केसर और मेवों का प्रयोग नहीं होता। शरद पूर्णिमा में रात भर चन्द्रमा के प्रकाश में खीर रखकर खाई जाती है। इससे मलेरिया आदि रोग होने की संभावना समाप्त हो जाती है। मलेरिया आदि रोग होने के बाद की परेशानी से अच्छा और वैज्ञानिक है खीर खाकर मलेरिया न होने देना। आज एक षड्यंत्र के तहत समाज को सांस्कृतिक और आयुर्वेद से दूर किया जा रहा है। लोगों का विश्वास अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति पर छा चुका है और एक धारणा बन चुकी है कि आयुर्वेद मात्र जड़ी बूटी चिकित्सा है। सच्चाई इसके विपरीत है। 90 प्रतिशत आयुर्वेद तो हमारे समृद्ध परम्पराओं में छिपा है। अत: अब प्रत्येक पूर्णिमा पर यज्ञ कर खीर खायें और खिलाएं मलेरिया भगायें।

ग्रेटर नोएडा, मो. : 9456274350

महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार प्रकल्प के अन्तर्गत

देश-विदेश में वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु

प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से देश-विदेश में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की श्रृंखला आरम्भ की जा रही है, जिसके लिए सुयोग्य उम्मीदवारों के आवेदन आमंत्रित हैं। कुल पद : **भारत हेतु २०,** तथा **विदेशों हेतु ५** हैं। **इच्छुक अभ्यर्थी के लिए वांछित योग्यताएं ये हैं**- 1. आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो। 2. गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो। 3. यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो। 4. आर्य समाज के प्रचार की हार्दिक इच्छा रखता हो। 5. युवा हों, जिसकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो।

चयनित अभ्यर्थी की प्रथम नियुक्ति भारत के किसी भी राज्य में तथा विशिष्ट अंग्रेजी भाषा ज्ञान और कार्य के अनुभव के उपरांत भारत से बाहर किसी भी देश में की जाएगी। पूर्ण योग्यता होने की दृष्टि में सीधे विदेशों में नियुक्ति की जा सकती है। सम्मानित मानदेय के साथ-साथ वाहन व्यय, मोबाइल व्यय, स्वास्थ्य बीमा, आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य साधने की दृढ़ इच्छा रखने वाले युवा महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र- विश्व में आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता और उनकी महान इच्छा, पारिवारिक स्थिति एवं परिचय, भाषाज्ञान, कम्प्यूटर ज्ञान, शैक्षिक योग्यता, पासपोर्ट नं0, मोबाइल एवं ईमेल के साथ तत्काल रूप से **'संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति'** के नाम- **'१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली- ११०००१'** के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें।

-संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति

प्रेरक प्रसंग (क्रमश:)

रामकुमार 'धनुर्धर' वानप्रस्थ द्वारा सम्पादित नीति शतक से..

सेवा-सहायता है सर्वोपरि धर्म

धर्मग्रंथों और नीतिशास्त्रों में कई ऐसे प्रसंग हैं, जो हमें सेवा-परोपकार की महत्ता बताते हैं। ऐसे प्रसंगों में बताया गया है कि दूसरों की सेवा-सहायता अगर अपने हाथों से की जाए, तो स्वत: मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। महान आध्यात्मिक विभूति स्वामी करपात्री जी महाराज ऐसे ही संत थे, जिन्होंने दीन-दुखियों की सेवा में ही जीवन होम कर दिया था। एक बार उनके सान्निध्य में कलकत्ता (अब कोलकाता) में शतचंडी महायज्ञ किया जा रहा था। अचानक उड़ीसा (अब ओडिशा) के कुछ क्षेत्रों में भूकंप आया, तो लाखों व्यक्ति बेघरबार हो गये। स्वामी जी ने भंडारे वाले दिन अपने अनुयायियों को आदेश दिया कि भंडारे के लिए एकत्रित तमाम खाद्य सामग्री तुरंत उड़ीसा के भूकंप पीड़ितों में बांट दी जाए।

स्वामी जी ने अपने प्रवचन में कहा- हमारे धर्मशास्त्रों में आपदा पीड़ितों, असहायों तथा जरूरतमंद लोगों की सेवा-सहायता को सर्वोपरि धर्म बताया गया है। सनातन धर्म तो चींटी और पशु-पक्षियों में भी अपने ईश्वर के दर्शन करने की प्रेरणा देता है। फिर इन प्राकृतिक आपदाओं के मारे मानवों की सेवा-सहायता तो साक्षात् नारायण की आराधना ही है।

स्वामी जी के प्रवचन का तुरंत प्रभाव पड़ा और उसी समय लाखों रुपये भूकंप पीड़ितों के सहायतार्थ इकट्ठा हो गए। स्वामी करपात्री जी स्वयं भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों में पहुंचे और सेवाकार्य में जुट गए।

धर्मशास्त्रों के लिए अनूठा बलिदान

चीन के विद्वान ह्वेनसांग ने नालंदा विश्वविद्यालय में धर्मग्रंथों का गहन अध्ययन किया। वह हिंदू धर्मशास्त्रों से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने अनेक धर्मग्रन्थों का संग्रह किया। लौटते समय वह असंख्य धर्मग्रंथ और कलात्मक मूर्तियां अपने साथ ले चले। नदी पार कराने के लिए उन्हें नाव में बिठाया गया। कुछ भारतीय छात्र नौका में उनके साथ बैठ गये।

नौका कुछ दूर ही पहुंची थी कि गहरे पानी के भंवर के कारण वह डगमगाने लगी। नाविक ने कहा- यदि नौका से कुछ वजन कम कर दिया जाए, तो यह डूबने से बच सकती है। उसने सुझाव दिया कि पुस्तकों के गट्ठर को नदी में फेंक दो, सबके प्राण बच जाएंगे।

ह्वेनसांग ने ये शब्द सुने, तो उनका चेहरा पीला पड़ गया। वह बोले- अब भारत के महान धर्मशास्त्रों के प्रचार का मेरा सपना अधूरा ही रह जाएगा। मेरा परिश्रम व्यर्थ हो जाएगा। ये शब्द सुनते ही सभी भारतीय छात्रों ने कहा- आप चिंतित न हों, ग्रंथों की जगह हम नदी में कूद जाते हैं। यह कहकर वे उफनती नदी में कूद गये। तीन छात्र तो तैर कर नदी पार कर गये, लेकिन शेष दो ने धर्मशास्त्रों की अमूल्य धरोहर को बचाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। ह्वेनसांग ने चीन पहुंचकर इन धर्मशास्त्रों का अनुवाद किया। इस धरोहर की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग करने वाले भारतीय छात्रों के प्रति वह जीवन भर कृतज्ञता व्यक्त करते रहे।

टाट के बिस्तर पर गहरी नींद

एक साधु ने अपने लिए एक भव्य आश्रम बनाया। आश्रम के रख-रखाव के लिए धन की जरूरत थी, इसलिए अपने शिष्यों के साथ धन जुटाने निकल पड़े। उनका सोचना था कि धनी सेठों एवं राजाओं से धन प्राप्त होने पर वह सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

रास्ते में चलते-चलते रात हो गयी, तो वह चर्चित सूफी संत राबिया की कुटिया में पहुंचे। साधु एवं उनके शिष्यों को ससम्मान खाना खिला, सोने की व्यवस्था कर, संत राबिया स्वयं एक टाट बिछाकर लेट गईं। उन्होंने साधु को तो सोने के लिए तकिया दिया, लेकिन खुद सिर के नीचे एक ईंट रख ली। साधु ने देखा कि कुछ ही देर में राबिया को नींद आ गयी। साधु गद्दे पर सोने के आदी थे, इसलिए दरी पर उन्हें नींद नहीं आयी। वे हैरान थे कि आखिरकार राबिया टाट पर गहरी नींद में कैसे सो रही है। सूर्योदय से पूर्व ही राबिया जगीं और अल्लाह का नाम लेकर कुटिया की सफाई में जुट गयीं। फिर वह कुटिया में पलने वाली चिड़िया एवं अन्य पशुओं को दाना डालकर आनंद का अनुभव करने लगीं। साधु समझ गये कि राबिया की गहरी नींद और उनके आनंद का कारण सादगीपूर्ण जीवन तथा भौतिक सुख-साधनों के प्रति विरक्ति है। उन्होंने उसी समय से अपने आश्रम को त्याग दिया, और एक छोटी-सी कुटिया में रहने लगे। कुछ ही दिनों में वह भी संत राबिया की तरह संतोष तथा साधना का अनुभव करने लगे।

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित
'नीति शतक' (दो भागों में)
इसमें है सौ-सौ प्रेरक कथानकों का समावेश

स्वयं पढ़ें और बच्चों को भी पढ़ाएं

देश-विदेश के आर्यसमाजों एवं आर्य महानुभावों के नाम

आर्यावर्त केसरी के प्रधान सम्पादक

डॉ० अशोक कुमार आर्य का एक विशेष पत्र

कृपया इस पत्र को अवश्य पढ़ें तथा पढ़ने के बाद अपनी प्रतिक्रिया से मोबा. नं0 9412139333 पर अवगत भी कराएं।

देश-विदेश स्थित आर्यसमाजों के मान्य श्री प्रधान जी/ मंत्री जी!
एवं
मान्य श्री आर्यप्रवर महानुभाव!

सादर-सप्रेम नमस्ते;

प्रिय महोदय,

संसार का कल्याण करने के उद्देश्य से युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् 1875 में आर्य समाज की नींव रखी। इसके लिए आर्य समाज के 10 सार्वभौमिक नियमों की व्यवस्था भी की। आर्य समाज ने स्वदेशी, स्वभाषा, स्वराज्य, संस्कृति, शिक्षा, संस्कार, नारी-मुक्ति, छुआछूत एवं मद्य निषेध, सामाजिक समरसता, एकता, अखण्डता, राष्ट्रवाद, बंधुता, या यह कहें कि जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं, जिसमें अपना अभूतपूर्व योगदान न दिया हो। वस्तुतः इसीलिए आर्य समाज की भूमिका सदैव अग्रणी रही है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि यदि आर्य समाजियों में कहीं शिथिलता हो, तो वह दूर की जाए, आर्य समाज की गतिविधियों से समाज व राष्ट्र को जोड़ा जाए तथा अपनी गतिविधियों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए। इस दृष्टि से जैसा कि आपको विदित ही है कि आधुनिक युग मीडिया का युग है। कहावत है कि 'जंगल में मोर नाचा, किसने देखा', अर्थात् मीडिया प्रसारक की भूमिका निभाती है।

आर्यावर्त केसरी एक ऐसा पत्र है, जो आर्य समाज की गतिविधियों, कार्यक्रमों व उपलब्धियों को विभिन्न स्तम्भों के रूप में प्रकाशित करता है, जैसे- हमारे गुरुकुल, हमारे प्रतिष्ठान, ऐसे होते हैं आर्य, आर्ष साहित्य समीक्षा, आर्यजगत के प्रकाशन, लोकोपयोगी न्यास (ट्रस्ट), मूर्धन्य संन्यासी, स्वनामधन्य क्रान्तिकारी, अमर शहीद, विभिन्न प्रकल्प, तपस्वी साधक, गतिविधियों के समाचार, आध्यात्मिक व सामयिक, आलेख व काव्य रचनाएं आदि-आदि। इस प्रकार के स्तम्भों के प्रकाशन से आर्य जगत की समृद्धि, उसकी वृहद् योजना, कार्यक्रमों की भावी रूपरेखा व गतिविधियों की समस्त जानकारी आम जन तक पहुंचती है, जिससे समाज संगठित भी होता है और सुदृढ़ भी, इससे प्रेरणा भी मिलती है और उत्साह भी।

अतः यह सुस्पष्ट है कि यदि आर्य जगत की पत्र-पत्रिकाओं सहित आर्यावर्त केसरी का भी प्रचार-प्रसार बढ़ेगा, तो यह आर्य समाज, वैदिक दर्शन व महर्षि दयानन्द सरस्वती के चिन्तन-मनन के प्रचार-प्रसार में बहुत सहायक होगा। लेकिन पत्र-पत्रिकाओं के प्रचार-प्रसार में एक बड़ी अड़चन यह आती है, और बहुधा ऐसी शिकायतें सम्मानित पाठकों की ओर से आये दिन सुनने व देखने में आती रहती हैं कि उन्हें पत्र-पत्रिकाएं डाक द्वारा समय से प्राप्त नहीं होतीं या कभी-कभी मिलती हैं। चूंकि ये सभी पत्र-पत्रिकायें, जिनमें आर्यावर्त केसरी भी सम्मिलित है, अपने सभी सम्मानित पाठकों को साधारण डाक से अर्थात् 25 पैसे का डाक टिकट लगाकर, भेजी जाती हैं, जिस कारण उनकी कई बार पहुंचने की गारण्टी नहीं रह पाती। इसलिए हमने इसका एक उपाय सोचा है कि एक ही स्थान पर एक ही समाज से जुड़े यदि कम से कम 25 या 30 वार्षिक या आजीवन सदस्य बना दिये जाएं, तो आर्यावर्त केसरी नियमित रूप से रजि0 पैकेट या कोरियर के माध्यम से निश्चित व समयबद्ध ढंग से मिलता रहेगा।

उस पैकेट से सम्मानित सदस्यों तक आर्यावर्त केसरी पहुंचाने का गुरुतर एवं पावन दायित्व आप सरीखे उत्साही महानुभावों को उठाना होगा। इसके लिए यदि आप चाहेंगे, तो आपको आर्यावर्त केसरी की ओर से आपका एक फोटोयुक्त प्रेस परिचय कार्ड (Press Identity Card) जिसकी बहुत बड़ी अहमियत तथा मान्यता होती है, जारी किया जाएगा, जिससे आप अपने ग्राम, नगर, शहर, तहसील, जनपद या क्षेत्र में आर्यावर्त केसरी के मान्यता प्राप्त प्रेस प्रतिनिधि के रूप में भी भूमिका निभा सकते हैं। इतना ही नहीं, इस कार्य के लिए आप अन्यों को भी प्रेरित कर सकते हैं। उन्हें भी इसी प्रकार का फोटोयुक्त प्रेसकार्ड जारी किया जाएगा। इस कार्ड की अवधि प्रारम्भ में 1-1 वर्ष के लिए होगी है, जो बाद में बढ़ाई जाती रहेगी। आपसे हमारी अपेक्षा केवल सदस्यता के विस्तार की ही नहीं है, अपितु गतिविधियों के समाचार, विचारपरक लेख, व विभिन्न मुद्दों पर प्रतिक्रिया तथा साक्षात्कार आदि भेजते रहने की भी होगी। फिलहाल हम आपको इतना आश्वस्त अवश्य कर सकते हैं कि आपके द्वारा प्रेषित एक-एक शब्द को सदैव यथोचित स्थान मिलता रहेगा। तो आइए, फिर देर क्यों, आज से ही इस महान मिशन में सहयोगी बनें व आर्यसमाज के संकल्प नाद 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को साकार रूप देने का एक विराट अभियान छेड़ें। धन्यवाद;

भवदीय
डॉ० अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी,
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उप्र)
मो. : 9412139333

नोट : आप सदस्यों की सूची बनाकर अविलम्ब हमें भेजिए साथ ही, केसरी का बंडल किस पते पर जाएगा, यह भी लिखिए। सम्मानित सदस्यों के लिए वार्षिक सदस्यता की सहयोग राशि 100/- है। आजीवन (10 वर्षीय 1100/- तथा संरक्षक सदस्यता राशि 3100/-) है। आप जैसा भी उचित समझें, भेज सकते हैं।

यहां तक कि सम्मानित सदस्यों को एक वर्ष तक आर्यावर्त केसरी की आपूर्ति करने के बाद भी। जैसा आप उचित समझें। हमारा उद्देश्य कोई आर्थिक लाभार्जन नहीं है।

यह कार्य अत्यन्त व्यय, समय व श्रमसाध्य है। लक्ष्य केवल एक है कि कैसे आर्यत्व की मिशनरी भावनाएं जन-जन तक पहुंचें। यकीन मानें कि हम आपके विश्वास व पुरुषार्थ को कभी भी ठेस नहीं पहुंचने देंगे।

ये हैं आर्यावर्त केसरी को रजिस्टर्ड बंडलों से भेजने की योजना

- इसके लिए एक ही स्थान पर चाहिए कम से कम 25 से 35 सम्मानित सदस्यों की व्यवस्था।
- पैकेट से भेजे गये पत्र सम्मानित सदस्यों तक कैसे पहुंचें, यह व्यवस्था आपको बनानी है।
- पत्र रजि0 बण्डलों से आप तक पहुंचेगा यथासमय, यह तय है।
- केवल सदस्यता सूची भेजिए, सदस्यता राशि वर्षान्त में भी भेज सकते हैं अर्थात् एक वर्ष की अवधि पूर्ण होने पर भी। जैसा आपको सुविधाजनक लगे।
- कृपया इस प्रसार मिशन में सहयोगी बनें।
- आपका पावन योगदान ऋषि के मिशन को निश्चय ही गति देगा। धन्यवाद,

-सम्पादक

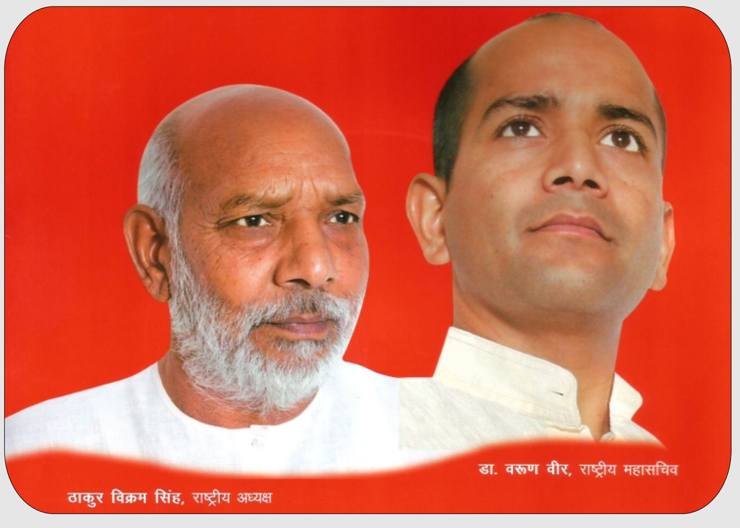

अराजकता, भ्रष्टाचार, शेषण, सरकारी लूट-खसोट, तानाशाही, बलात्कार, मुस्लिम तुष्टिकरण, कॉरपोरेट लूट
अमीर और भी अमीर / गरीब और भी गरीब ● जनता कंगाल नेता मालामाल
क्या इसी के लिए हम स्वतंत्र हुए थे?
हिन्दू हिन्दी हिन्दुस्तान- अब न सहेंगे हम अपमान
आइए, मिलकर इन सबके विरुद्ध एक नई आजादी के लिए संघर्ष करें
राष्ट्रभक्तों का संगठन
राष्ट्र निर्माण पार्टी
भारत निर्वाचन आयोग द्वारा पंजीकृत राजनीतिक दल
ठा० विक्रम सिंह- राष्ट्रीय अध्यक्ष   डॉ० वरुण वीर- राष्ट्रीय महासचिव
क्षेत्रीय कार्यालय : ए-41, लाजपतनगर II, निकट- मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली- 24, फोन : 011-45791152, 29842527, 9313254938
प्रान्तीय कार्यालय : मोदीपुरम बाईपास, निकट- रेलवे फाटक, मेरठ (उ0प्र0), फोन : 0121-3191555, 9971284450, 9917063562

जगदगुरू दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती

१४ सितम्बर पुण्यतिथि पर विशेष

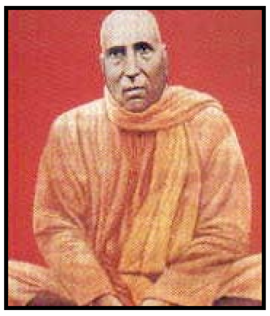

स्वामी स्वतंत्रानन्द

सोते संसार को जगाने वाले महर्षि दयानन्द के गुरु विराजनन्द जी का नाम इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में उल्लेखनीय है। आपने ही संसार को अज्ञान गर्त में पड़ने से बचाया और अस्त हुए सूर्यदेव को फिर से संसार में चमकाया। जब तक सूर्य और चन्द्रमा प्रकाशमान हैं, तब तक मानव आकाशमण्डल में विराजमान सूर्य भी चमकता रहेगा।

बाल्यकाल :

आपका जन्म 1835 वि0, तदनुसार 1778 ई0 में जालन्धर जिले के कर्तारपुर उपनगर के निकट गंगापुर ग्राम में शारदशाखीय, भारद्वाज गोत्रीय, सारस्वत ब्राह्मण श्री पं0 नारायण दत्त जी के घर में हुआ था। गंगापुर ग्राम बोई नदी की बाढ़ से बह गया, इसलिए श्री नारायण दत्त जी के कुल के संबन्ध में अधिक वृत्तांत ज्ञात नहीं। स्वामी विरजानन्द जी का एक बड़ा भाई भी था। स्वामी जी का बाल्यकाल का नाम अज्ञात है।

पांच वर्ष की अवस्था में शीतला नामक रोग से स्वामी जी की आंखें जाती रहीं। बाल्यावस्था में नेत्रहीन हो जाने से कहा जाता है कि इनको रंग रूप का कोई ज्ञान नहीं था। कुछ ऐसा सुनने में आता है कि भगवान जिसे किसी इन्द्रिय से विहीन करता है, उसे कोई न कोई उस कमी की पूर्ति के लिए विशेष शक्ति प्रदान करता है। भगवान ने सांसारिक विषयों से विमुख करने के लिए जहां स्वामी जी के बाह्य नेत्रों का हरण कर लिया, वहां इन्हें बुद्धि रूपी दिव्य नेत्र प्रदान किये। इनकी बुद्धि बहुत ही विलक्षण थी।

ब्राह्मणकुलपरम्परा के अनुसार इनको पिता ने बाल्यावस्था में ही संस्कृत पढ़ाना आरम्भ किया। कुछ वेदमंत्र तथा अनेक शिक्षाप्रद श्लोक आदि भी कण्ठस्थ कराये, क्योंकि जब तक बच्चे को शुद्ध उच्चारण एवं सामान्य मन्त्रपाठ न आ जावे, तब तक यज्ञोपवीत का अधिकार नहीं माना जाता। आठ वर्ष की आयु में पिता ने बालक का यज्ञोपवीत संस्कार किया।

माता-पिता का स्वर्गवास :

इस बालक को बाल्यावस्था में नेत्रहीनता का दुख तो मिला ही था, अब इसके एकमात्र माता-पिता ही सहारा थे। भगवान ने उस सहारे से भी वंचित कर दिया अर्थात् बाल्यकाल में ही माता-पिता स्वर्ग सिधार गये। इस असहाय बालक को ऐसी भयंकर अवस्था में कितना कष्ट सहना पड़ा होगा?इसे लेखनी नहीं लिख सकती। यह तो हृदय से ही जाना जा सकता है।

लोक में माता-पिता के पश्चात् अबोध बालकों का बड़ा भाई ही पितृतुल्य समझा जाता है। किंतु इस बालक पर तो विपत्तियों के मेघ मण्डरा रहे थे। बड़े भाई और भावज को यह बालक आंख में कुणक के समान लगने लगा। भाई-भावज के कुव्यवहार से इस बालक को एक दिन घर की देहली से बाहर पैर रखना ही पड़ा।

ऋषिकेश की ओर प्रस्थान :

यह बालक अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर, ब्रह्मचारी वेष धारण कर अनेक विघ्न-बाधाओं का सामना करता हुआ 15 वर्ष की आयु में ऋषिकेश पहुंचा। उस समय यातायात के आज जैसे उत्कृष्ट साधन नहीं थे। अत: यात्रार्थी को अनेक कष्ट सहने पड़ते थे। यह बालक तो नेत्रविहीन था। इसने यात्रा में कितने कष्ट सहे होंगे, यह अनुमानगम्य है।

ये ऋषिकेश में पहुंचकर एक कुटीर बनाकर वहां रहने लगे। यह कन्द मूलों का आहार करते हुए गायत्री जप में लीन रहते थे। रात्रि में अनेक बार पशु आते और इनकी कुटिया के दरवाजे खटखटाते, किंतु इन्हें किसी प्रकार का भय नहीं था। ये सर्वथा निर्भीक थे। पशु-भग्न कुटीर को फिर बना लेते थे। ये प्रात:काल स्नानादि से निवृत्त होकर कण्ठ तक गंगाजल में खड़े रहकर गायत्री का जप किया करते थे।

ऋषिकेश का परित्याग :

एक दिन की घटना इस प्रकार से बतायी जाती है कि इस बालक को रात्रि में सोते समय यह ईश-वाणी सुनाई दी- ''तुम्हारा यहां जो कुछ होना था, वह हो चुका, अब तुम यहां से चले जाओ।'' इस वाणी को सुनकर यह बालक उठ बैठा और हृषिकेश से जाने की मन में ठान ली।

यह ऋषिकेश से चलकर कनखल पहुंचे। यहां आकर स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी से संन्यास की दीक्षा ली और उनसे विद्या भी पढ़ने लगे। स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी ने इनका विरजानन्द नाम रखा।

काशी की ओर प्रस्थान :

स्वामी विरजानन्द जी कनखल से चलकर गंगतीर के साथ-साथ भ्रमण करते हुए काशी पहुंचे। उस समय काशी में विद्याधर नामक एक पंडितप्रवर रहते थे, जो वास्तव में ही विद्याधर थे। विरजानन्द जी ने उनसे विद्याध्ययन आरम्भ किया। स्वामी जी की कुशाग्र बुद्धि से श्री पं0 विद्याधर जी बहुत ही प्रभावित हुए। अनेक ईर्ष्यालु पंडितों के प्रतिशोध करने पर भी पं0 विद्याधर जी अपनी ज्ञान-गंगा में स्वामी जी को नहलाते रहे। धन्य हैं श्री पं0 विद्याधर जी, जिन्होंने स्वामी जी को विद्यारत्न बनाने में पूरा बल लगाया।

स्वामी विरजानन्द जी काशी में पढ़ते समय पढ़ाया भी करते थे। स्वामी जी के पढ़ाने की रीति बहुत ही विलक्षण थी, जिसे देखकर काशी का पंडित-मंडल दांतों तले अंगुली दबाता था।

गया-यात्रा :

स्वामी जी ने काशी से गया की ओर पैदल ही प्रस्थान किया। मार्ग में स्वामी जी को कुछ-एक लुटेरों ने आ घेरा। उन्होंने रक्षा के लिए चीत्कार किया। निकट में ही ग्वालियर राजा के सिपाहियों का शिविर था। चीत्कार को सुनकर सशस्त्र सिपाही वहां आ पहुंचे, जिन्हें देखकर डाकू भाग गये। सिपाही स्वामी जी को राजा के पास ले गये। राजा ने स्वामी विराजनन्द जी का बहुत सत्कार किया। कुछ काल वहां निवास कर स्वामी जी 'गया' चले गये और वहां भी अध्ययन करते हुए अध्यापन कार्य करते रहे।

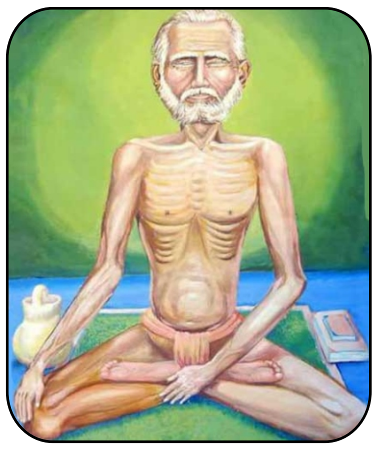

स्वामी जी गया से कलकत्ता, कलकत्ता से सोरों और सोरों से गड़ियाघाट पहुंचे। यहां भी पठन-पाठन का कार्य करते रहे। स्वामी जी में यह एक विशेषता थी कि वे छात्रों से माता-पिता के सदृश प्रेम करते थे। छात्रों के चरित्र का भी विशेष ध्यान रखते थे।

अलवर नरेश से भेंट :

एक दिन स्नानादि के पश्चात् गंगा में खड़े होकर स्वामी विरजानन्द जी स्तोत्र पाठ कर रहे थे। संयोगवश उस दिन अलवर-नरेश भी वहां उपस्थित थे। अलवर नरेश अत्यंत विद्वत्प्रिय थे। वे अपनी राजधानी को दूसरी काशी देखना चाहते थे। जब तक स्वामी जी स्तोत्र पाठ करते रहे, तब तक वे उन्हें एकटक देखते रहे। स्वामी जी के मधुर स्वर एवं ब्रह्मचर्य से दैदीप्यमान तेजस्वी ललाट को देखकर अलवर नरेश अपने में खो गये। स्वामी जी पाठ समाप्ति के पश्चात् जब अपनी कुटिया की ओर चलने लगे, तो राजा ने कहा कि अलवर चलिए। स्वामी जी समझ गये कि ये अलवर नरेश हैं। विरजानन्द जी ने उत्तर दिया- तुम गृहस्थी और राजा, हम साधु और अकिंचिन, हमारा तुम्हारा क्या मेल?अलवर नरेश के बार-बार अत्यंत आग्रह करने पर स्वामी विरजानन्द जी ने इस प्रतिज्ञा पर अलवर जाना स्वीकार कर लिया कि ''यदि आप मुझ से विद्याध्ययन करें और जिस दिन आप पढ़ने न आवें, मैं उसी दिन अलवर छोड़ दूंगा।'' राजा ने यह प्रतिज्ञा सहर्ष स्वीकार कर ली। कुछ काल पश्चात् स्वामी विरजानन्द जी अलवर पहुंच गये।

अलवर-निवास :

अलवर पहुंचने पर अलवर-नरेश ने स्वामी जी के भोजन, छादन आदि का सुप्रबन्ध कर दिया। अलवर नरेश स्वामी जी से नित्य प्रति पढ़ने लगे। एक दिन राजा ने स्वामी जी महाराज से प्रार्थना की कि कृपया कोई ऐसा उपाय बताइए, जिससे मैं शीघ्र ही संस्कृत व्याकरण पढ़ सकूं। शिष्य विनयसिंह की विनय पर स्वामी जी ने शब्द-बोध नामक ग्रन्थ की रचना की, जिससे राजा की व्याकरण में अच्छी गति हो गयी। स्वामी जी का लिखा 'शब्द-बोध' नामक ग्रन्थ आज भी अलवर में पुस्तकालय में सुरक्षित है।

स्वामी जी यहां अन्य छात्रों को भी संस्कृत पढ़ाया करते थे। प्रेमसुख नामक छात्र प्रमुख शिष्यों में से था। स्वामी जी का पुराना शिष्य अंगदराम भी यहां पठनार्थ आ गया था।

एक दिन राजदरबार में नृत्यगान, राग-रंग हो रहा था। उस दिन यह राजच्छात्र उसी में लीन रहा और पाठ के समय को भूल गया। स्वामी जी वचन के पक्के थे। उसी दिन अंगदराम शिष्य के साथ अलवर छोड़ चले आये। अलवर नरेश इससे बहुत खिन्न हुआ और अपने किये पर पश्चाताप करने लगा।

पुनः सोरों आगमन :

स्वामी जी अलवर से सोरों गड़ियाघाट में फिर आ विराजे। विद्यापिपासु छात्र विद्यानिधि स्वामी जी के पास फिर आने लगे। यहां पठन-पाठन का कार्य पुन: प्रारम्भ हो गया। अंगदराम शिष्य ने स्वामी जी महाराज की बहुत सेवा की।

सोरों परित्याग :

एक दिन स्वामी जी को भयंकर रोग ने आ घेरा। यहां तक कि स्वामी जी के जीवन की कोई आशा न रही। किंतु भगवान को ऐसा इष्ट न था। अंगदराम तथा वैरागिवर मथुरादास ने अत्यंत श्रद्धा एवं भावना से स्वामी जी की बहुत ही शुश्रुवा की, जिससे स्वामी जी को फिर से जीवन मिला। तत्पश्चात् स्वामी जी को यह स्थान न रुचा। सोरों से स्वामी जी मुरसान चले गये और मुरसान से भरतपुर पहुंच गये। यहां के राजाओं ने भी स्वामी जी का हृदय से स्वागत किया।

मथुरा-निवास :

स्वामी जी भरतपुर से चलकर मथुरा पहंचे। मथुरा में आकर अलवर के जागीरदार गूजरमल के घर पर ठहरे। तत्पश्चात् उन्होंने गतश्रम नारायण के मंदिर में पाठशाला खोली। इस मन्दिर में यह पाठशाला केवल दो मासपर्यन्त चली। तत्पश्चात् एक मकान किराये पर लिया, जो 'सिरानों का घर' नाम से प्रसिद्ध है। इसमें पाठशाला का संचालन किया। पाठशाला को सुचारु रूप से चलाने के लिए छात्रों के भोजन आदि का भी प्रबन्ध किया। स्वामी जी अपनी पाठशाला में व्याकरण में सिद्धान्तकौमुदी, शेखर, मनोरमा आदि, न्याय में न्यायसिद्धान्तमुक्तावलि, न्यायदर्शन आदि तथा अमरकोष, निघण्टु आदि ग्रन्थ पढ़ाया करते थे। स्वामी विरजानन्द जी की अध्यापन-शैली बहुत ही सुन्दर थी। विदित हुआ है कि छात्र काशी से भी स्वामी जी की पाठशाला मथुरा में विद्याध्ययन के लिए आया करते थे। इससे स्वामी जी के पाण्डित्य का अनुमान सरलता से किया जा सकता है।

स्वामी जी की पाठशाला को अलवर जयपुर के राजा आर्थिक सहायता प्रदान करते थे। इसी आर्थिक सहायता से स्वामी जी पाठशाला को सुचारु रूप से चलाते थे।

स्वामी विरजानन्द जी के चित्त में एक बड़ी भारी चिन्ता बनी रहती थी। वे सोचा करते थे कि संसार का उद्धार किस प्रकार से हो सकता है। स्वामी जी का अनेक राजा-महाराओं से संबन्ध था। इससे विदित होता है कि वे राजा महाराजाओं की बुद्धि को बदलना चाहते थे और उनको वैदिक धर्मावलम्बी बनाना चाहते थे। यदि राजा लोग सुधर जावें, तो प्रजा का सुधार सरल है। साथ-साथ भारत का परतंत्रतारूपी कण्टक भी उनके हृदय को बहुत क्लेश देता रहता था। वे इसी चिन्ता के समुद्र में डूबे रहते थे कि किस प्रकार से प्रिय भारत को परतंत्रता के बन्धन से मुक्त कर स्वतंत्रता के दर्शन कराऊं। किस प्रकार से फिर से संसार में वैदिक धर्म का प्रसार हो। अनुमान है कि स्वामी जी का सोरों से मथुरा आगमन का यही एकमात्र कारण हो।

कृष्ण शास्त्री का शास्त्रार्थ :

मथुरा में राधाकृष्ण नामक एक प्रसिद्ध सेठ निवास करता था, जो प्रथम जैन मतावलम्बी था। उसे कारणवशात् जैन मत से घृणा हो गयी और वैष्णव बन गया। वैष्णव मत की दीक्षा उसने रंगाचारी नामक गुरु से ली। रंगाचारी के गुरु कृष्ण शास्त्री थे, जो व्याकरण और न्याय के प्रकाण्ड पंडित माने जाते थे। सेठ कृष्णदास ने वृन्दावन में एक बड़ा भारी मन्दिर बनवाया, जो निज गुरु रंगाचारी के सम्मानार्थ उन्हें भेंट कर दिया। सेठ जी को इससे भी संतुष्टि न हुई। सेठ जी ने एक सुवर्णमय मन्दिर मथुरा में भी बनवाया,जो 'शाह जी का मन्दिर' नाम से प्रसिद्ध है। यह भी जनता में गुरु जी की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए गुरुजी को भेंट कर दिया।

एक दिन सेठ जी के गुरु जी गुरुश्री कृष्ण शास्त्री जी मथुरा पधारे और कुछ काल के लिए मथुरा में रहने लगे। एक घटना इस प्रकार बतलाई जाती है कि कहीं कृष्ण शास्त्री के शिष्य लक्ष्मण ज्योतिषी तथा मुडमुडिया पाण्ड्या और स्वामी विरजानन्द जी के शिष्य रंगदत्त चौबे और गंगादत्त चौबे इनमें 'अजाद्युक्ति' पद में क्या समास है, इस विषय पर वाद-विवाद ठन गया। शिष्य वाद-विवाद का निर्णय न कर सके। अपने-अपने गुरुजनों से जाकर इस संबन्ध में चर्चा की। सेठ राधाकृष्ण अपने गुरु के समान गुरु के गुरु शास्त्री की भी प्रतिष्ठा फैलाना चाहते थे। **क्रमश:**

गौरवगाथा गुजरात की

शिवकुमार रस्तोगी सरस, डिप्टीगंज, मुरादाबाद

बहन भाइयो! गौरव-गाथा, गाता अब 'गुजरात' की।
गल्प नहीं यह सच्चाई है, बीते वर्ष पचास की।।1।।
पांच दशक से पूर्व, कभी यह हिस्सा था महाराष्ट्र का
मगर आज बन गया राज्य यह मालिक है 'सौ-राष्ट्र' का।।2।।
रेगिस्तानी सीमा पर यह क्षेत्र, रहा ऊबड़-खाबड़।
हरियाली का नाम नहीं था, पेड़ उगे कीकड़ पाखड़।।3।।
'काले-पानी' सा कहलाता था दूरस्थ 'कच्छ का रण'।
तीन ओर था जल से आवृत जलाभाव भी था भीषण।।4।।
बंजर धरती के कारण सब कहलाते थे बनजारे।
चारागृह थे दूर-दूर तक, वे खानाबदोश बने सारे।।5।।
विगत पीढ़ियों से इस भू पर नहीं केन्द्र का था अवधान।
पर, जब से बीजेपी आयी प्रमुदित हैं सब श्रमिक किसान।।6।।
गुर्जर जनता ने अब फिर से शुरु किया है गौ-पालन।
साधनहीन युवा शक्ति को मिले आज सब संसाधन।।7।।
रुका 'पलायन' अब प्रतिभा का उद्यम-केन्द्र खुले घर-घर।
नगर, ग्राम, कस्बे सूबे के बने आज हैं महानगर।।8।।
विद्युत-उत्पादन जारी है, जगमग करते ज्योतित ग्राम।
सौर-ऊर्जा, हवा, लहर से निर्मित 'विद्युत' आती काम।।9।।
नहरों का भी जाल बिछा है बदली है नदियों की चाल।
'बंजर-भू' अब बनी उर्बरा गुर्जर-प्रान्त हुआ खुशहाल।।10।।
खेत-खेत पाइप बिछवाये वर्षा के जल को रोका।
बेकारी, भुखमरी दूर की मिला प्रगति का है मौका।।11।।
शिक्षित युवा-शक्ति को संग ले विकसित हुआ, राज्य गुजरात।
बहुत पुरानी नहीं कहानी विगत बाइस वर्षों की बात।।12।।
न्यूयार्क वाशिंगटन जैसे नगर अनेक बसा डाले।
कभी सपेरे, जादूगर थे अब सब कम्प्यूटर वाले।।13।।
सरकारी अधिकारी सेवक छोड़ न पाते अब गुजरात।
रोजी, रोटी, शिक्षा, रक्षा चहल-पहल रहती दिन रात।।14।।
कभी हुए थे यहां दयानन्द, गांधी जी, सरदार पटेल।
है स्वराज्य अधिकार हमारा-कह दुश्मन को दिया धकेल।।15।।
रेशम सूती वस्त्रों के हित जाना जाता है गुजरात।
कच्चा माल मिलों को मिलता आस पास है उगी कपास।।16।।
उपकरणों पर कपड़े बुनते घर-घर में चरखे चलते।
कुम्भकार के चक्र घूमते घोड़े-ऊंट सभी पलते।।17।।
दूध दही की नदियां बहतीं फल सब्जी जाते परदेश।
खुले द्वार हैं रोजगार के चौखट पर है खड़ा विदेश।।18।।
बुनकर, कुम्भकार, पशुपालक सचमुच होते रचनाकार।
बुनते वस्त्र बनाते बर्तन दूध दही का है व्यापार।।19।।
पशुओं के हित पशुगृह खोले कभी न भूल उनका स्वत्व।
गुजराती खच्चर- गदहों संग सबको मिलता उचित महत्व।।20।।
इन पशुओं के साथ घूमते रहते सदा घुमंतू परिवार।
इनके बच्चों की शिक्षाहित किया गया समुचित उपचार।।21।।
'योग' और 'कम्प्यूटर शिक्षा' हुई यहां पर है अनिवार्य।
औद्योगिक संस्थान खुले हैं कुशल प्रबन्धन उनका कार्य।।22।।
जन-शिक्षा, जन-स्वास्थ्य, सुरक्षा बी0जे0पी0 का है आधार।
रोजी, रोटी मिले पेयजल कहीं नहीं हो भ्रष्टाचार।।23।।

माननीय अटल बिहारी वाजपेयी को भावभीनी श्रद्धांजलि

अमृतवर्षी के मेघ विमल

डॉ० रामबहादुर 'व्यथित'

जय राष्ट्रपुरुष! हे! आप्त तेज हे! महाकवि! शत-शत वन्दन।
चिन्तन-विराट! हे! दीप्त-भाल हे! महामना! तव अभिनन्दन।।
वाणी के प्रखर अमर पुत्र,
हिन्दी संस्कृत का भाल तुम्हीं।
हे काव्य-मंच के सूत्रधार!
निर्बल के थे हमदर्द तुम्हीं।।
तुम राजनीति-चाणक्य अमर, हे आत्पपुरुष! शत शत वन्दन।
चिन्तन-विराट! हे दीप्त-भाल! हे महामना! तव अभिनन्दन।।
संसद की गरिमा के प्रतीक,
यू0एन0ओ0-प्रखर तेज अटल।
पोखरन-परीक्षण था अजेय,
भारत का दीपित शौर्य विमल।।
जन-जन में बांटा प्रेम-चषक, हे प्रखर-वाक! शत-शत वन्दन।
चिन्तन-विराट! हे दीप्त-भाल! हे महामना! तव अभिनन्दन।।
वो अग्नि-पन्थ! अनजान डगर,
फूलों से नन्दन सजा दिया।
थे अस्पृश्य-बन गये वन्द्य,
दलदल में 'सरसिज' खिला दिया।।
जो थे अछूत- हैं आज शीर्ष, हे दिव्य-तेज! शत-शत वन्दन।
चिन्तन-विराट! हे दीप्त-भाल! हे महामना! तव अभिनन्दन।।
वाणी से कर अमृत-वर्षा,
माटी को चन्दन बना गये।
प्रबल विरोध-स्वर संसद का,
तुम सबको आसव पिला गये।।
सम्पूर्ण धरा करती प्रणाम, हे सर्वप्रिय! शत-शत वन्दन।
चिन्तन-विराट! हे दीप्त-भाल! हे महामना! तव अभिनन्दन।।
सुमनों से सींचा यह उपवन,
रहबर! पुष्पों के हार मिलें।
अमृत से सींची शुष्क बेल,
तुमको पावन हरि-धाम मिले।।
अमृत-वर्षा हे मेघ विमल! सब के प्रणम्य! शत-शत वन्दन।
चिन्तन-विराट! हे दीप्त-भाल! हे महामना! तव अभिनन्दन।।

-विजय वाटिका, कोठी नं०-३ सिविल लाइन्स, बदायूं
मोबा० : 9837618715

ओ३म् गान

ओमप्रकाश आर्य

सर्वश्रेष्ठ नाम ओ3म् मन में बसाइए,
ओ3म् ओ3म् जपते-जपते जिंदगी संवारिए।
प्रभु के हजारों नाम वेद बतलाते हैं,
ध्यान-योग-साधना में ओ3म् अपनाइए।
अन्त:करण के सारे कल्मष धुलेंगे,
महिमा निराली इसकी सुनिए सुनाइए।
नाव भवसिन्धु की है बैठकर पार करो,
खुद पार होइए औरों को कराइए।
बन्धन कटेंगे सारे, मुक्ति मिलेगी,
नित्य सुबह-शाम इसे ध्यान में उतारिए।
ओ3म् जैसा नाम जग में कोई नहीं है,
ज्योति हृदय-मन्दिर में इसकी जलाइए।
राम ने जपा था ओ3म् , कृष्ण ने जपा था,
शिव ने जपा था ओ3म्, सबको बताइए।
ओ3म् की है महिमा न्यारी, मुक्ति दिलाने वाली,
श्वांसों में सान करके श्वांस हर निकालिए।।

-आर्यसमाज, रावतभाटा, वाया-कोटा (राज०)

रामकुमार कृषक की दो गजलें

(एक)

सुबह से चल रहे शाम की खातिर
मगर चलते नहीं हैं हम महज व्यायाम की खातिर।
कई मौसम जिए हमने चमन भी कम नहीं घूमे
लहू के घूंट पर भूले नहीं हैं जाम की खातिर।
रगें रौशन अभी तक है महकता है पसीना भी
किए हैं काम जो हमने नहीं थे नाम की खातिर।
रहे लो में हम बेशक अयोध्या भी रही मन में
रथी होकर नहीं निकले तभी तो राम की खातिर।
कटाया सिर जिन्होंने हम उन्हीं की राह के राही,
झुकाकर सिर नहीं गुजरे अलग अंजाम की खातिर।

(दो)

हमारी जिंदगी जैसी भी हो पर जिंदगी तो है,
मुबारक हो खुदी औरों को अपनी बेखुदी तो है।
जिधर भी देखिए रिश्ते का रेगिस्तान दिखता है,
दिलों से उमड़कर आंखों से बहती इक नदी तो है।
नहीं हम जानते गुजरेगा कैसे वक्त अब आगे,
हमारे साथ जो गुजरी है, तो गुजरी सदी तो है।
जमाने में नहीं जो कुछ वही सब कुछ हमारे हैं,
खुदा से हो न हो बंदो से अपनी जिंदगी तो है।
हमें कुछ कम नहीं सौंपा हमारे रहनुमाओं ने,
हमारी पीठ अहसानों से उनके ही लदी तो है।

अवश्य पढ़ें- आज ही मंगाएं

आर्य समाज की विचारधारा, वैदिक चिन्तन, तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों को जानने के लिए पढ़िए

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित
तथा आचार्य क्षितीश वेदालंकार द्वारा लिखित लघु पुस्तिका

आर्य समाज की विचारधारा

प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए यह लघु पुस्तिका। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि में सैकड़ों की संख्या में बांटें यह पुस्तिका, और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज व ऋषि दयानन्द सरस्वती की वैदिक विचारधारा।

न्यूनतम ५०० पुस्तकें लेने पर वितरक में नाम व पता प्रकाशन की सुविधा, तथा मूल्य में भी विशेष छूट।

हमारा पता है- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.), मो० : 09412139333

ओ३म्

HANDICRAFT

सुषमा कला केन्द्र

आकर्षक स्मृति चिन्ह तथा पारितोषिक सामग्री के लिए सम्पर्क करें।

प्रतिनिधि-

प्रो० सुषमा गोगलानी
मोबा. : 9582436134

अशोक कुमार गोगलानी
मोबा. : 8587883198

सी–1/1904 G.H.-05, B-Tech Zone-4, चैरी काउण्टी, ग्रेटर नोएडा (वैस्ट)

रामचन्द्र व रावण के युद्ध के विषय में पक्की जानकारी

भगवानदास आर्य

तिथि माघ शुक्ल द्वितीया (दोज) से युद्ध शुरु हुआ और चैत्र कृष्ण चतुर्दशी तक सतासी दिन चला। बीच में 15 दिन युद्ध बन्द रहा। शेष 72 दिन युद्ध हुआ। इस पौराणिक कथा के अनुसार माघ शुक्ल प्रतिपदा को अंगद जी दूत बनकर रावण के दरबार में गये। दोज को रावण द्वारा सीता जी को माया (छल-कपट) से उनके पति श्री रामचन्द्र जी के कटे शीष का दर्शन कराया गया। उस दिन से 7 दिनों तक राक्षसों तथा वानरों का महासंग्राम हुआ। स्कन्द पुराण के अनुसार माघ शुक्ल नवमी से चार दिन तक कुम्भकर्ण ने बहुत से वानरों को खा डाला। अर्थात् उन्हें मार दिया, न कि मुंह से खा गया। अन्त में वह रामचन्द्र जी मारा गया। बाद में द्वादशी ने रावण ने युद्ध शुरु किया, जो चैत्र वदी चौदस (चतुर्दशी) तक चला और मारा गया। यह बात स्कन्द पुराण के ब्रह्मखण्ड धर्मख्य महात्म्य में दी गयी है। रावण का देहान्त मंगलवार समय 5 बजे अग्नि अस्त्र द्वारा हुआ। और अमावस्या को विभीषण को राज्य सौंप दिया गया था।

दशहरा को रावण नहीं मारा गया था, अपितु इस दिन श्रीराम ने युद्ध का अभियान शुरु किया था। इनके पूर्वज दशहरा को युद्ध के अभियान को जाया करते थे।

योग साधना नित्य कर्म

मंगूसिंह आर्य

'योग' वह साधन है, जिसके द्वारा आत्मा और परमात्मा का मिलन होता है। मनुष्य ही संसार में एक ऐसा प्राणी है, जो योग साधना के द्वारा अपने जीवन लक्ष्य प्रभु दर्शन को प्राप्त कर सकता है। अणु और कण-कण में समाया हुआ सर्वत्र विराजमान है। किंतु उसे पाने या देखने के लिए एक साधन योग है। योग का अर्थ महान है। मनुष्य योग का जीवन में आचरण कर शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक सदाचार की प्राप्ति और आत्मिक उन्नति व पवित्रता प्राप्त होती है। जिससे सुख और शान्ति मिलती है। योग वह मार्ग है, जिसमें सोना, जागना, आहार-विहार, विचार आदि सब क्रियाएं व्यवस्थित और एक लक्ष्य के लिए होती हैं। इससे शरीर, मन और बुद्धि तीनों स्वस्थ होते हैं। सेवा और तप ही योग है। दूसरों को सुख पहुंचाकर हम सुख के अधिकारी बन सकते हैं।

प्रधान- आर्य समाज, रामपुर सफेद, पो० जमनाखास, जि०- अमरोहा (9410680534)

अनूठा है पं. बुद्धदेव विद्यालंकार कृत गीता भाष्य

श्री पंडित (बुद्धदेव विद्यालंकार) जी महाराज ने गीता पर भी अपनी किस्म का एक नया भाष्य लिखा है। गीता का यह भाष्य पंडित जी ने महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की मान्यताओं को ध्यान में रखते हुए लिखा है और यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि गीता में भी महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म के सिद्धांतों का ही प्रतिपादन किया गया है। गीता के इस भाष्य में भी पंडित जी की प्रतिभा और पांडित्य के पग-पग पर दर्शन होते हैं। पाठक पंडित जी के इस भाष्य को पढ़ें और गीतामृत रस का पान करें।

आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति,
उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

शुभाशंसा

गीता भाष्य तो अनेक देखे पर यह समर्पण भाष्य अपने ढंग का एक ही है। इसमें गीता के प्रत्येक श्लोक की व्याख्या करते हुए यह ध्यान रखा गया है कि अमुक श्लोक का अर्जुन की अवस्था से क्या सम्बंध है?कि इस मणिसूत्र को विद्वद्वर पंडित बुद्धदेव जी (स्वामी समर्पणानन्द जी) ने कहीं नहीं भुलाया है। सर्वत्र सुन्दर समन्वय स्पष्ट प्रतीत होता है। वैदिक कर्मकांड का प्रवर्त्तन ऋषियों ने क्यों किया था?इसका तात्त्विक विवेचन किया है (पृ. ३७, ६६, ७०)। स्थान-स्थान पर अस्पष्ट अथवा विवादास्पद शब्दों का बड़ा उत्तम विश्लेषण किया है। 'संप्लुतोदके' 'वेदवादिनः' 'पितरः' 'चतुर्भुज' ''विश्वरूप 'पापयोनि' आदि शब्दों की व्याख्या देखते ही बनती है। अहम् और माम् का तात्पर्य तथा श्रीकृष्ण के समष्टि जीवन का विवेचन दर्शनीय है। प्रत्येक श्लोक के साथ संस्कृत में अन्वय भी दिया गया है, जिससे गीता के साधारण संस्कृतज्ञ पाठकों को संस्कृत सीखने में भी साहाय्य मिलेगा

मैं पाठकों से अनुरोध करूँगा कि कम से कम निम्नलिखित श्लोकों के भाष्य को तो वे अवश्यमेव पढ़ें — १/४०, २/३८, ३६, ४२, ४५, ४६, ४७, ३/६, १५, १७, ४/३१, ७/१६ इत्यादि तथा जहाँ वि.वि. (विशेष विवेचन) है वह स्थल भी अवश्य मनन करें। इस अद्भुत समर्पण भाष्य के रचयिता स्वामी समर्पणानन्द जी के प्रति हठात् मुख से यही निकलता है—

भाष्यं यद् भवताऽवता त्रिजगतां ज्ञानार्थमुद्भासितम्,
तेनेमे मनुजा अबोधगहनध्वान्तं निरस्याऽऽत्मनः।
श्रद्धास्नेहसुमैः स्रजं विरचितां दत्त्वा भवत्पादयोः,
आकल्पं तव कीर्त्तने विषयतां नेष्यन्ति ताँस्तान् गुणान्।

डॉ. हरिदत्त शास्त्री त्रयोदशतीर्थ,
कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरिद्वार
प्रस्तुति— गुरुकुल प्रभाताश्रम, टीकरी, जानी, मेरठ

हमारी महान विभूतियां

प्रखर राष्ट्रचेता

विपिन चन्द्र पाल

1. वास्तविक नाम	:	विपिन चद्र पाल
2. जन्म	:	7 नवम्बर सन् 1858
3. जन्म स्थान	:	सियालहाट (बांग्लादश)
4. परिवार	:	सम्पन्न हिन्दू कायस्थ
5. अध्ययन	:	प्रेसीडेन्सी कॉलेज से बी0ए0 1875 में
6. पुस्तकें	:	1. मिसेज बेसेन्ट ए साइकोलोजिकल स्टडी 2. मेमोरीज ऑफ माई लाइफ टाइम
7. विदेशी प्रवास	:	इंग्लैण्ड (कई बार)
8. राजनैतिक गतिविधियां	:	1. द्वितीय वार्षिक कांग्रेस अधिवेशन से कांग्रेस में (सन् 1886 ई0) 2. उदारवादी विचारधारा के विरोधी एवं उग्रवादी विचारों के प्रमुख 3. विदेशी सामान का बहिष्कार 4. निष्क्रिय प्रतिरोध एवं राष्ट्रीय शिक्षा पर आधारित आन्दोलन 5. कई बार जेल यात्राएं 6. लाल-बाल-पाल के पाल 7. स्वशासन की पूर्णता पर विश्वास एवं मांग
9. मृत्यु	:	20 मई 1932

अवश्य पढ़ें

आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित विभिन्न संग्रहणीय व उत्कृष्ट पुस्तकें। कम से कम सौ पुस्तकें मंगाने पर विशेष छूट है।

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा द्वारा प्रमाणित १४ आर्यपर्वों से संबंधित एक विशेष पुस्तक
आर्य पर्व पद्धति
मूल्य : २० रुपये

महर्षि दयानन्द की विशेषताएं
मूल्य : ८ रुपये

आर्योद्देश्य- रत्नमाला
मूल्य : ८ रुपये

आर्य कन्या की सूझबूझ
मूल्य : ८ रुपये

आर्यसमाज की मान्यताएं
मूल्य : ८ रुपये

गौकरूणानिधिः
मूल्य : ५ रुपये

आर्ष साहित्य बिक्री केन्द्र

समस्त प्रकार का आर्ष साहित्य- वेद, उपनिषद, दर्शन, ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, जीवन परिचय, सम-सामयिक साहित्य सहित पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य एवं ओ३म ध्वज, पट्टिकाएं, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

सम्पर्क करें :
डॉ. अशोक कुमार आर्य
आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा
(उ0प्र0)-244221
मोबा. : 09412139333

वैदिक कर्मकाण्ड, प्रवचन, आयुर्वेद सम्बन्धी परिचर्चाओं के लिए सम्पर्क करें

सुमन कुमार वैदिक
(वैदिक प्रवक्ता)
निवास- जे.-380, बीटा-।।, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)
मोबा. : 8368508395, 9456274350

आर्यावर्त केसरी प्रकाशन समूह

विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

विश्व भर में वेद के प्रचार-प्रसार व महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को घर-घर पहुंचाने को संकल्पित आर्यावर्त केसरी विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए देश-विदेश से प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित करता है। आवेदन संक्षिप्त जीवनवृत्त के साथ दिनांक 15 दिसम्बर 2018 तक पहुंच जाने चाहिए। (आवेदन हिन्दी भाषा में ही स्वीकार किये जाएंगे)। पुरस्कारों की घोषणा 01 जनवरी 2019 तक की जाएगी। पुरस्कार इस प्रकार हैं—

- **अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक हिन्दी भाषा व भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान प्रदान करने पर- अन्तर्राष्ट्रीय आर्यरत्न पुरस्कार।**
- **राष्ट्रीय स्तर पर वेद के प्रचार-प्रसार, समाज-सेवा के लिए- राष्ट्रीय आर्यावर्त भूषण पुरस्कार।**
- **नि:शक्त, गरीब, अनाथ, व गुरुकुलों की उत्कृष्ट सेवा व दानशीलता के लिए- आर्यावर्त सौम्या दानवीरश्री पुरस्कार।**
- **वैदिक साहित्य के विद्वान लेखक, कवि व पत्रकार के लिए- आर्यावर्त कलमश्री पुरस्कार।**
- **युवा लेखक, कवि, गायक, पत्रकार, समाजसेवी के लिए- आर्यावर्त युवा गौरव पुरस्कार।**

आवेदन भेजने का पता : सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
☎ फोन : 05922-262033, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

माण्डवी गुजरात में है श्यामजी कृष्ण वर्मा का भव्य स्मारक

पं. दिवाकर शास्त्री

महर्षि दयानन्द के शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा का माण्डवी (गुजरात) स्थित में है भव्य स्मारक

आजादी के अमर नायक श्याम जी कृष्ण वर्मा का गुजरात के माण्डवी में भव्य स्मारक है, जो एक दर्शनीय स्थल है।

मेरे बार-बार प्रतिवेदन और निवेदन के परिणामस्वरूप श्री नरेन्द्र मोदी जी ने, जो उस समय गुजरात के मुख्यमंत्री थे, जिनेवा जाकर महर्षि दयानन्द के मानस पुत्र तथा क्रान्तिकारियों के मार्गदर्शक श्यामजी कृष्ण वर्मा की अस्थियों को भारत लाकर उनकी जन्मस्थली गुजरात के कच्छ जिले के माण्डवी कस्बे में विसर्जित किया और इस प्रकार इस स्थान पर एक भव्य स्मारक का निर्माण कर मौरवी जनपद में टंकारा के बाद एक और भव्य तीर्थ देश को सौंप दिया।

इस स्मारक में एक इण्डिया हाउस, श्यामजी कृष्ण वर्मा एवं उनकी पत्नी की आदमकद प्रतिमा तथा स्वामी दयानन्द की संगमरमर की प्रतिमा स्थापित की गयी है। साथ ही, उनके पत्रों का संग्रह, तथा उनकी अस्थियों के अवशेषों का संग्रह भी यहां रखा गया है। जहां तक सम्भव हो सके प्रत्येक भारतीय को यह स्मारक सपरिवार अवश्य देखना चाहिए।

उल्लेखनीय है कि भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले तथा क्रान्तिकारियों को ब्रिटेन में जाकर प्रेरणा देने वाले श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर 1857 को माण्डवी (गुजरात) में हुआ था।

युवा अवस्था में ही महर्षि दयानन्द ने इनके हृदय में देशोन्नति की भावना उत्पन्न की। उनकी प्रेरणा से विश्व विख्यात ऑक्सफोर्ड विश्व विद्यालय में संस्कृत, हिन्दी, गुजराती के अध्यापन के साथ बार एट लॉ की उपाधि लेने वाले प्रथम भारतीय होने पर वे रतलाम, उदयपुर और जूनागढ़ रियासतों के दीवान रहे, किन्तु रजवाड़ों की स्वतन्त्रता के प्रति रूचि न देखकर वे पुन: लन्दन चले गये, जहाँ हाईगेट के पास एक भवन खरीदा जिसका नाम इण्डिया हाऊस रखा तथा जिसके द्वार उन्होंने सभी भारत से आने वालों के रहने के लिए खोल दिये। भारत से विद्याध्ययन हेतु आने वालों को वे स्वामी दयानन्द, हरवर्ट स्पेन्सर, छत्रपति शिवाजी और महाराणा प्रताप के नाम पर छात्रवृत्तियां देकर पढ़ाते थे। उन्होंने इण्डिया सोशियोलोजिस्ट समाचार पत्र इण्डिया हाउस से प्रकाशित किया। विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, मदनलाल धींगड़ा जैसे नवयुवकों को प्रेरणा देकर क्रान्तिकारी बनाने वाले श्यामजी कृष्ण वर्मा ने बम बनाने का नुस्खा नाम से एक पुस्तक भी छापी, तथा बम बनाने की विधि भारत भेजी। खुदीराम बोस जैसे क्रान्तिकारियों ने उसी से बम बनाना सीखा, तथा अंग्रेजों पर बम से आक्रमण करने का श्रीगणेश किया। मदनलाल धींगड़ा द्वारा कर्जन वायली को गोली मारने से इण्डिया हाउस की गतिविधियों पर सरकार की दृष्टि पहुंची। उससे पूर्व कि अंग्रेज सरकार श्यामजी कृष्ण वर्मा को गिरफ्तार करती, वह पहले फ्रांस, और फिर जेनेवा चले गये, जहां से उन्होंने अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियां जारी रखीं।

महर्षि दयानन्द जब मेरठ में थे, तब उन्होंने एक पत्र संस्कृत में श्याम जी कृष्ण वर्मा को भेजा था जो लन्दन के प्रसिद्ध समाचार-पत्र में 23 अक्टूबर 1880 में इस टिप्पणी के साथ छपा था कि ''एक हिन्दू क्षत्रिय नवयुवक, जिसका नाम श्यामजी कृष्ण वर्मा है, जिसकी संस्कृत भाषा में उत्तम योग्यता है, जिसने एक जगत-प्रसिद्ध व्यक्ति से शिक्षा पायी है, जो संस्कृत भाषा का ज्ञाता है, और जिसने अद्वैत, नास्तिकता और मूर्तिपूजा के खण्डन द्वारा आर्यावर्त के समस्त धार्मिक सम्प्रदायों में बड़ी हलचल उत्पन्न कर दी है।''

स्वामी दयानन्द के क्रान्तिकारी शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपनी मृत्यु से पूर्व इच्छा व्यक्त की थी कि मैं अपने स्वतंत्र देश की वायु में स्वांस नहीं ले सका, परन्तु मेरी अस्थियां स्वतंत्र भारत में अवश्य पहुंचें। 31 मार्च 1930 को जेनेवा में इनका देहान्त हो गया। 73 वर्ष तक इस महापुरुष की अस्थियां जेनेवा में प्रतीक्षा करती रहीं कि कोई भारत मां का लाल आए और मेरी अस्थियों को मातृभूमि का दर्शन कराए। किन्तु न तो सरकार को और न ही किसी और को इसकी चिन्ता थी। अन्तत: मेरे द्वारा निरन्तर गुजरात के मुख्यमंत्रियों से सम्पर्क कर श्यामजी कृष्ण वर्मा की इच्छा स्मरण करायी जाती रही, किन्तु किसी ने भी इस ओर ध्यान नहीं दिया। सन् 2002 में जब नरेन्द्र मोदी मुख्यमंत्री बने तब वर्तमान प्रधानमंत्री तथा तत्कालीन मुख्यमंत्री मोदी के प्रयासों से जेनेवा से श्याम जी कृष्ण वर्मा की अस्थियाँ भारत लायी गयीं।

पुरोहित- आर्य समाज, काकरिया, अहमदाबाद

सद्विचार

कृष्णमोहन गोयल

(1) ब्रह्मचर्य से ही विद्वानों ने मृत्यु पर विजय पायी।

(2) ब्रह्मलोक उनका है, जो तप, ब्रह्मचर्य और सत्य में निष्ठा रखते हैं।

(3) ब्रह्मचर्य का अर्थ है मन, वचन और इन्द्रियों का संयम।

(4) ब्रह्मचर्य उत्तम तप, नियम, ज्ञान, दर्शन और चरित्र और विनय का संगम है।

(5) ब्रह्मचर्य का कारगर अर्थ होता है- इन्द्रिय जप, इन्द्रिय शुद्धि।

(6) बुराई का मुख्य उपचार मनुष्य का सद्ज्ञान है।

(7) एक बुराई दूसरी बुराई को जन्म देती है।

(8) जीवन में बुद्धिमानी की एकाग्रता ही श्रेष्ठ होती है।

(9) बुरी बात को याद रखने पर इंसान, हैवान बन जाता है।

(10) ईश्वर से प्रेम और सौहार्द द्वारा ही मुक्ति पाई जाती है।

(11) निर्ममता यानी पदार्थाभिमान का साहित्य।

(12) भक्त से बढ़कर दक्ष कोई नहीं होता।

(13) मौन अर्थात् संयत बोलना।

(14) माँ सृष्टि का आरम्भ है आदिशक्ति है।

-११३, बाजार कोट, अमरोहा

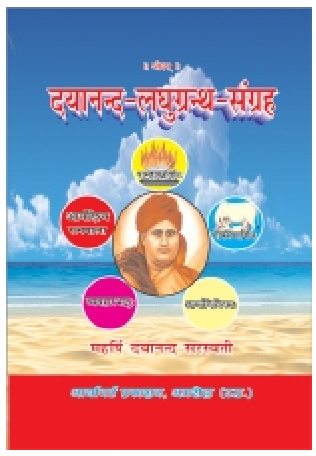

अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित संग्रहणीय पुस्तक

दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह

इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत इन पांच पुस्तकों का संग्रह है-

- पंचमहायज्ञविधि
- आर्योद्देश्यरत्नमाला
- गोकरुणानिधि
- व्यवहारभानु
- आर्याभिविनय:

पृष्ठ : 212, मूल्य : 60/- रुपये

पुस्तकें वी०पी०पी०, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांस्पोर्ट से भेजी जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।

पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र : 09412139333

आध्यात्मिक चिन्तन एवं वेदानुशीलन पर आधारित स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु' द्वारा लिखित पुस्तक

आयुष्मान् भव

(दीर्घ अर्थात् लम्बी आयु प्राप्त करो)

१२० पृष्ठ, रंगीन आवरण

: पुस्तक प्राप्ति स्थल :

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु'

आर्यसमाज मन्दिर, बिहारीपुर

बरेली (उ0प्र0)– 243003

चल0 : 094123721179, 9759527485

मूल्य : 25 रुपये

आज ही मंगाएं यह संग्रहणीय पुस्तक

नियमित स्तम्भ

आर्य जगत की ऐतिहासिक धरोहर

आर्यावर्त केसरी के इस नियमित स्तम्भ में आर्य जगत की ऐतिहासिक धरोहरों के विषय में महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की जाती है। विद्वान लेखकों, इतिहासविदों तथा इन ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षकों व व्यवस्थापकों से अनुरोध है कि इस स्तम्भ के लिए अग्रांकित पते पर धरोहर के चित्र सहित बहुमूल्य सामग्री भेजने का कष्ट करें। साथ ही, अपना पासपोर्ट साइज़ फोटो भी प्रकाशनार्थ भेजें। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221, मोबा. : 9412139333

देश-विदेश में प्रसारित होने वाले

आर्यावर्त केसरी

में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने-कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

विज्ञापन दर इस प्रकार है-

पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क- 12000/- रुपये

अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क- 6500/-

अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क- 3500/-

स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है।

-प्रबन्धक (विज्ञापन), मोबा. : 8630822099

घर-घर तक पहुँचाएं कालजयी ग्रंथ

सत्यार्थ प्रकाश

मूल्य- ५०/-, १५०/-

: प्रकाशक :

आर्यावर्त प्रकाशन,

अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)

सम्पर्क- 9412139333

श्री, समृद्धि, यश, वैभव, सुस्वास्थ्य व दीर्घायुष्य की दें

मंगलकामनाएं

जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, अथवा किसी विशेष उपलब्धि जैसे पावन अवसरों पर अपने परिजनों, मित्रों व शुभचिन्तकों को बधाई व शुभकामनाएं देना न भूलें।

आओ आर्यावर्त केसरी के माध्यम से ऐसे बधाई संदेश व शुभकामनाएं प्रकाशित कराएं...

और प्रदान करें आर्यावर्त केसरी के प्रचार-प्रसार यज्ञ में 501/- की सहयोग रूपी पावन आहुति।

-सम्पादक (मोबा. : 9412139333)

टंकारा चलो

आर्यावर्त केसरी प्रबंध समिति के नेतृत्व में गतवर्षों की भांति अहमदाबाद, द्वारिका, पोरबंदर, सोमनाथपुरी व टंकारा आदि का परिभ्रमण कार्यक्रम २६ फरवरी से ०६ मार्च २०१९ तक

विस्तृत रूपरेखा पृष्ठ तीन पर देखें। ३

सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी- सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

विस्तृत जानकारी पृष्ठ- ९

सुमन कुमार वैदिक
8368508395, 9456274350
डॉ. अनिल रायपुरिया
9837442777

अब आप आर्यावर्त केसरी के नियमित स्तम्भों में निरन्तर पढ़ते रहेंगे महत्वपूर्ण सामग्री

इन स्तम्भों के लिए सचित्र सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं

ये हैं आर्यावर्त केसरी के कुछ महत्वपूर्ण स्तम्भ

♦ ऐसे होते हैं आर्य, ♦ भारतवर्षीय गौशालाएं, ♦ प्रकाशित आर्ष साहित्य- पुस्तकों की समीक्षा, ♦ आर्य जगत की महान विभूतियां ♦ आर्य जगत के लोकोपयोगी न्यास (ट्रस्ट), ♦ आर्य जगत के गुरुकुल, ♦ आर्य जगत के प्रकाशक और प्रकाशन, ♦ आर्य जगत की ऐतिहासिक धरोहर, ♦ आर्य जगत के क्रांतिवीर- अमर सेनानी- शहीद, ♦ आर्य जगत के मूर्धन्य प्रवक्ता व तपस्वी सन्यासी वृन्द, ♦ आर्य जगत के भजनोपदेशक, ♦ आर्य जगत द्वारा संचालित प्रकल्प, ♦ आर्य जगत की शिक्षण संस्थाएं और काव्यजगत, योग भगाये रोग, खानपान और स्वास्थ्य जैसे अन्य कई नियमित कॉलम।

कृपया उपर्युक्त स्थाई कॉलमों (स्तम्भों) के लिए सचित्र सामग्री भेजें प्रकाशनार्थ। साथ ही, अपने प्रियजनों को दें जन्म दिवस आदि की हार्दिक शुभकामनाएं तथा दिवंगत दिव्यात्मनों का करें भावपूर्ण स्मरण।

आर्यावर्त केसरी के इस अत्यन्त व्यय साध्य, समय साध्य व श्रम साध्य प्रकाशन यज्ञ में आपकी तन-मन-धन से सहयोग रूपी पावन आहुति भी सादर निवेदित हैं। मंगलकामनाओं सहित,

- डॉ० अशोक कुमार आर्य, सम्पादक (9412139333)

आर्यावर्त केसरी के सदस्यों से विनम्र अनुरोध

आर्यावर्त केसरी के सभी सम्मानित सदस्यों से अनुरोध है कि उनकी वार्षिक सदस्यता अवधि नाम व पते की स्लिप पर अंकित रहती है। अतः स्लिप पर अंकित अवधि के अनुसार यथासमय अपना वार्षिक सदस्यता सहयोग भेजते रहा करें। जिन मान्य सदस्यों ने अभी तक अपनी वार्षिक सदस्यता–राशि जमा नहीं की है, वे कृपया मनीआर्डर द्वारा आर्यावर्त केसरी के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त कर लें, ताकि उन्हें आर्यावर्त केसरी निरंतर मिलता रहे।

प्रबन्धक (प्रसार)– आर्यावर्त केसरी

आर्यावर्त प्रकाशन द्वारा स्थापित सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि में सहयोग देकर घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश

धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 09412139333

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त केसरी
संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक',
(मोबाा : 9456274350)
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार,
डॉ. ब्रजेश चौहान, अमित कुमार
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य